INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 1

भारत और मध्यप्रदेश का इतिहास

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

इतिहास		
प्राचीन भारत का इतिहास		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
	प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा • वेद एवं उपनिषद • आरण्यक , ब्राह्मण ग्रन्थ, षड्दर्शन (धर्म) • स्मृतियाँ, ऋत सभा समिति • गणतंत्र, वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, ऋण संस्कार • पञ्चमहायज्ञ, कर्म का सिद्धांत • बोधिसत्व एवं तीर्थकर	1
1.	सिन्धु घाटी सभ्यता • महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं एवं घटनाएँ • सिंधु सभ्यता में भिन्न स्थानों से आयात की जाने वाली वस्तुएं • सिंधु सभ्यतान का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन • सिंधु सभ्यता की उत्तरजीविता • हड़प्पा सभ्यता या सैंधव सभ्यता का पतन	23
2.	वैदिक काल • साहित्यिक स्त्रोत • पुरातात्विक स्त्रोत • ऋग्वैदिक काल एवं उत्तरवैदिक काल	32

	• प्रशासनिक संस्थाएँ • वैदिक काल में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन	
3.	धार्मिक आंदोलन • बौध धर्म के उदय के कारण • बौद्ध धर्म • बौध धर्म के पतन के कारण • बौद्धधर्म में प्रविष्ट बुराइयाँ • बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव • जैन धर्म • जैन धर्म की शिक्षाएं विचार और सिद्धांत • जैन संगीतियां	38
4.	महाजनपद काल • हर्यक वंश • नन्द वंश • नंद वंश के पतन के कारण	50
5.	प्रमुख प्राचीन राजवंश • मौर्य वंश • कुषाण वंश • सातवाहन वंश • गुप्त वंश, चालुक्य वंश, पल्लव वंश, चोल वंश • प्राचीन राजवंशों में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन	63

6.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु कला • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक • भारत के प्रमुख लोकनृत्य • प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएँ • साहित्य , पर्व एवं उत्सव	84
7.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास • प्राचीन भारतीय साहित्य • प्राचीन भारत की प्रमुख पुस्तकें • प्रमुख साहित्यिक रचनायें	109
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण • मोहम्मद बिन कासिम • आक्रमण के कारण का प्रमुख उद्देश्य • अरबों की सिंध विजय का परिणाम • सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं न्यायिक परिणाम • भारत में तुर्क आक्रमण • महमूद गजनवी • मुहम्मद गौरी	117

2.	दिल्ली सल्तनत • गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश, लोदी वंश • सल्तनत काल में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन • गुलाम कालीन वास्तुकला • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	124
3.	मुग़ल वंश • बाबर, हुमायूँ, अकबर, शाहजहाँ, औरंगजेब • मुग़ल काल में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन	140
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु • मुग़ल कालीन कला एवं वास्तु • दक्षिण भारतीय मध्य-कालीन स्थापत्य कला • मध्यकालीन हिन्दू मंदिर • राजस्थानी स्थापत्य कला • स्थापत्य कला में प्रांतीय शैलियों का योगदान चित्रकला एवं संगीत का विकास	145
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना • अंग्रेज, फ्रांसीसी संघर्ष	153

	• मुग़ल साम्राज्य का पतन	
2.	मराठा साम्राज्य • आंग्ल-मराठा युद्ध	161
3.	गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय • ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव	167
4.	1857 की क्रांति के पूर्व के विद्रोह • धार्मिक-राजनैतिक आन्दोलन • कृषक आन्दोलन • ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन • भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह	174
5.	1857 ई. की क्रांति	179
6.	भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • भारत में पत्रकारिता का विकास	188
7.	भारत में सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन • भारतीय पुनर्जागरण एवं इसके नेतृत्वकर्ता	190
7.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण • कांग्रेस की स्थापना	198

	• नरमपंथी / उदारवादी चरण / उग्रवादी आंदोलन • स्वदेशी आंदोलन • गाँधी वाद	
9.	आजादी के बाद का इतिहास और राष्ट्र निर्माण • गणतंत्र के रूप में भारत का उदय • आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) • देशी रियासतों का एकीकरण • राज्यों का पुनर्गठन • स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की प्रमुख घटनाएँ • पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय	222
	मध्यप्रदेश का इतिहास	
1.	मध्य प्रदेश के प्राचीन इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रमुख राजवंश • पाषाणकल • प्रागैतिहासिक काल • आद्य ऐतिहासिक काल • ऐतिहासिक काल	238
2.	मध्य प्रदेश के प्राचीन काल के प्रमुख राजवंश एवं उनका योगदान • गर्दभिल्ल वंश, नागवंश, औलिकर, परिव्राजक राजवंश, उच्च कल्प वंश, गुर्जर प्रतिहार वंश, कल्चुरी, चंदेल, परमार, तोमर, गोंडवंश, कच्छपघात वंश	240

3.	मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति	251
4.	मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन • मध्यप्रदेश में हुए प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन • मध्यप्रदेश की रियासतें • मध्यप्रदेश का पुनर्गठन • मध्यप्रदेश की प्रमुख कलाएँ और स्थापत्य कला	254
5.	मध्यप्रदेश की जनजातियां एवं बोलियां • जनजाति • मध्य प्रदेश की बोलियां	261
6.	मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल • मध्य प्रदेश की पर्यटन नीति • मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल • मध्य प्रदेश के प्रमुख जैन पर्यटक स्थल • मध्य प्रदेश के किले • अन्य इमारतें • मध्यप्रदेश की गुफाएं • मध्यप्रदेश की प्रमुख समाधि एवं मकबरे • मध्य प्रदेश के संग्रहालय • मध्यप्रदेश में विश्व धरोहर	266
7.	मध्य प्रदेश में जनजाति व्यक्तित्व • मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के उपनाम	270

	• राजा शंकरशाह, रघुनाथ शाह, रानी दुर्गावती, भीमाजी नायक, खाज्यानायक, टंट्या भील, गजनसिंह कोरकू, बादल भाई, पेमा फाल्या	
8.	मध्य प्रदेश के प्रमुख त्यौंहार लोक संगीत लोक कलाएं एवं लोक साहित्य • मध्य प्रदेश के प्रमुख त्यौंहार	273
9.	मध्य प्रदेश के प्रमुख मेले • मध्य प्रदेश के प्रमुख समारोह • मध्य प्रदेश के लोक संगीत • बुंदेलखंड के लोक गायन	274
10.	मध्य प्रदेश की प्रमुख लोक कलाएं • बुंदेलखंड के लोक नृत्य • आदिवासी लोकनृत्य	280
11.	मध्य प्रदेश के लोक नाट्य • मालवा क्षेत्र के लोकनाट्य • निमाड़ के लोकनाट्य • बघेलखंड के लोकनाट्य • मध्य प्रदेश के प्रमुख चित्रकार • मध्य प्रदेश के प्रमुख साहित्यकार व उनकी कृतियां	282
	मध्यप्रदेश : विविध	288

अध्याय – I
प्राचीन भारत की ज्ञान परम्परा

वेद एवं उपनिषद्

- **वेदान्त** ज्ञानयोग का एक स्रोत है जो व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद् है जो वेद ग्रंथों और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते हैं। **उपनिषद्** वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसीलिए इसको **वेदान्त** कहते हैं। कर्मकांड और उपासना का मुख्यतः वर्णन मंत्र और ब्राह्मणों में है, ज्ञान का विवेचन **उपनिषदों** में।
- 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है – 'वेदों का अंत' (अथवा सार)।
- वेदान्त की तीन शाखाएँ जो सबसे ज्यादा जानी जाती हैं वे हैं: **अद्वैत वेदान्त, विशिष्ट अद्वैत और द्वैत**।
- आदि शंकराचार्य, रामानुज और श्री **माध्वाचार्य** जिनको क्रमशः इन तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है, इनके अलावा भी ज्ञानयोग की अन्य शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ अपने प्रवर्तकों के नाम से जानी जाती हैं-
- जिनमें भास्कर, वल्लभ, चैतन्य, निम्बार्क, वाचस्पति मिश्र, सुरेश्वर और विज्ञान भिक्षु। आधुनिक काल में जो प्रमुख वेदान्ती हुये हैं उनमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, स्वामी शिवानंद स्वामी करपात्री और रमण महर्षि उल्लेखनीय हैं।
- ये आधुनिक विचारक अद्वैत वेदान्त शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं । दूसरे वेदान्तों के प्रवर्तकों ने भी अपने विचारों को भारत में भलिभांति प्रचारित किया है, परन्तु भारत के बाहर उन्हें बहुत कम जाना जाता है।
- संत में भी ज्ञानेश्वर महाराज, तुकाराम महाराज आदि संत पुरुषों ने वेदान्त के ऊपर बहुत ग्रंथ लिखे हैं आज भी लोग संतों के उपदेशों के अनुकरण करते हैं।

अद्वैतवाद – इसमें ब्रह्म का विवेचन निर्गुण रूप में किया गया है । इसके प्रमुख दार्शनिक शंकराचार्य हैं।

द्वैतवाद – इसमें ब्रह्म को सगुण ईश्वर के रूप में विवृत किया गया है। रामानुज तथा माध्वाचार्य इस शाखा के प्रमुख दार्शनिक हैं। जिनके मत क्रमशः विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत कहे जाते हैं।

उपनिषद्

विद्वानों ने उपनिषद् (upanishad) शब्द की व्युत्पत्ति उप+ नि + षद के रूप में मानी है। इसका अर्थ है कि जो ज्ञान व्यवधान रहित होकर निकट आये, जो ज्ञान विशिष्ट तथा संपूर्ण हो तथा जो ज्ञान सच्चा हो वह निश्चित ही उपनिषद्(upanishad कहलाता है।

भगवद् गीता

- भगवद् गीता या गीता का भारतीय विचारधारा के इतिहास में लोकप्रियता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है ।
- आज भी यह हिन्दुओं का सबसे पवित्र एवं सम्मानित ग्रंथ है। गीता मूलतः महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है।
- इसमें महाभारत युद्ध के अवसर पर कर्त्तव्यविमुख एवं भयभीत हुए अर्जुन को भगवान कृष्ण द्वारा किये गये उपदेशों का संग्रह है।
- इसकी शिक्षा में एक उदार समन्वय की भावना है, जो हिन्दू विचारधारा की सर्वप्रमुख विशेषता रही है।
- **डॉ.राधाकृष्णन** के शब्दों में यह किसी सम्प्रदाय विशेष की पुस्तक नहीं है, अपितु संपूर्ण मानव समाज की सांस्कृतिक निधि है, जो हिन्दू धर्म को उसकी पूर्णता में उपस्थित करती है ।

आरण्यक

आरण्यक का परिचय

वैदिक वाङ्मय के अनुसार आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों एवं उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है। संहिताओं के अन्तिम भाग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं और इनमें यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अंकुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्क ग्रन्थ हैं।

इनमें उस विषय का और विस्तृत विवेचन हुआ है। इसका ही सुविस्तृत रूप उपनिषदें हैं। वेद की जितनी शाखायें शास्त्रों में निर्दिष्ट हैं वे सभी प्राप्त नही होती हैं।

आरण्यक शब्द एवं अर्थ का विचार

आरण्यक का अर्थ है **अरण्ये भवम् आरण्यकम्** इस अर्थ में अरण्य शब्द से तत्रभवः (पाणिनि के अष्टाध्यायी सूत्र संख्या 4.3.53) इस सूत्र से भव अर्थ मे ठक् प्रत्यय होने पर आरण्यक शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ अरण्य (वन, जंगल) में होने वाला तत्त्व है।

आरण्यकों का महत्त्व

- वैदिक तत्त्व मीमांसा के इतिहास में आरण्यकों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है। जिस प्रकार दही से मक्खन, मलयपर्वत से चन्दन और ओषधियों से अमृत प्राप्त होता है।
- इनमें यज्ञ के गूढ रहस्यों का उद्घाटन किया गया है। इनमें मुख्य रूप से **आत्मविद्या और रहस्यात्मक विषयों** के विवरण हैं।
- वन में रहकर स्वाध्याय और धार्मिक कार्यों में लगे रहने वाले वानप्रस्थ आश्रमवासियों के लिए इन ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है।

आरण्यकों का उद्भव

- वैदिक संहिताओं के पश्चात् क्रम में ब्राह्मण ग्रन्थ आते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद आरण्यक ग्रन्थ आते हैं और उसके बाद उपनिषद् । **आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थों के पूरक हैं।**
- आरण्यकों का प्रारम्भिक भाग ब्राह्मण हैं और अन्तिम भाग उपनिषद् हैं। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् इतने मिश्रित हैं कि उनके मध्य किसी प्रकार की सीमा रेखा खींचना अत्यन्त कठिन है।
- आरण्यकों के उद्भव पर एक दो तर्कपूर्ण मतों पर भी विचार करना चाहिए। कुछ पाश्चात्य मतों के अनुसार यह कह सकते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित यज्ञविधि अत्यन्त कष्टसाध्य,

दुर्बोध और नीरस होने के कारण अरुचिकर होती जा रही थी।

- आत्मिक शान्ति के लिए आध्यात्म की आवश्यकता अनुभव की गई और स्थूल द्रव्यमय यज्ञ से सूक्ष्म आध्यात्म-यज्ञ की ओर प्रवृत्ति हुई। दूसरी ओर दुर्बोधता से बचने के लिए आरण्यकों की रचना की गई।
- दूसरे पक्ष पर यदि विचार करें तो आश्रम चतुष्टय नियमानुसार **गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास** इनके चार भेद हैं और वेद के भी चार भाग हैं- **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ।**
- इनका क्रमशः वर्गीकरण करें तो **ब्रह्मचर्याश्रम** में वेदाध्ययनगत ब्राह्मण ग्रन्थ विहित कर्मकाण्डों के प्रतिपादन हेतु गृहस्थाश्रम है और **वानप्रस्थाश्रमवासी** के लिये आरण्यक ग्रन्थ तथा संन्यासाश्रम के लिये उपनिषद् हैं।

आरण्यकों के रचयिता

- वैदिक ज्ञान राशि के अन्तर्गत आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों का ही एक भाग है। इन ब्राह्मण ग्रन्थों के भी रचयिता भिन्न-भिन्न ऋषि हैं, अतः आरण्यकों के रचयिता ब्राह्मण के रचनाकार ही माने जाते हैं।
- कुछ आरण्यकों के रचनाकार इस प्रकार हैं- **ऐतरेय ब्राह्मण** के रचनाकार महिदास ऐतरेय हैं।
- वही ऐतरेय आरण्यक के भी रचनाकार हैं ऐसा माना जाता है कि ऐतरेय आरण्यक के **चतुर्थ आरण्यक** के प्रवक्ता आश्वलायन और पञ्चम आरण्यक के प्रवक्ता शौनक ऋषि हैं।

आरण्यकों का प्रतिपाद्य विषय

- **वैदिक वाङ्मय** के अनुसार तथा **आरण्यक साहित्य** के अवलोकन के पश्चात् आरण्यकों का प्रतिपाद्य विषय आत्मदर्शन, परमात्मदर्शन, आध्यात्मिक ज्ञान आदि ही मानना समुचित होगा।
- आरण्यक ग्रन्थों में प्राणविद्या की महिमा का विशेष प्रतिपादन किया गया है । यहाँ प्राण को कालचक्र बताया गया है। दिन और रात्रि प्राण एवं अपान है ।
- **तैत्तिरीयारण्यक में यज्ञोपवीत** का महत्त्व बताया गया है। यज्ञोपवीत धारण करके जो यज्ञ, पठन आदि किया जाता है, वह सब यज्ञ की श्रेणी में आता है।
- आरण्यकों में ऐतिहासिक तथ्यों का भी अत्यल्प प्रयोग हुआ है। गंगा-यमुना के मध्यवर्ती प्रदेश को आरण्यकों में अत्यन्त पवित्र बताया गया है। इसी भाग में कुरुक्षेत्र और खाण्डव वन भी है।

समुपलब्ध आरण्यक ग्रन्थ

सम्प्रति वैदिक साहित्य के प्रचलित लेखक **आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र** आदि ने उपलब्ध आरण्यकों की **संख्या 6** मानी है। **आचार्य भगवद्दत्त जी एवं आचार्य वाचस्पति गैरोला** ने समुपलब्ध आरण्यकों की **संख्या 8** मानी है।

ये निम्नवत् हैं-

1. **ऋग्वेद के आरण्यक** - (क) ऐतरेय आरण्यक (ख) शांखायन आरण्यक
2. **शुक्ल यजुर्वेद के आरण्यक** - (क) बृहदारण्यक - यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्य है ।
3. **कृष्ण यजुर्वेद के आरण्यक** - (क) तैत्तिरीय आरण्यक (ख) मैत्रायणी आरण्यक
4. **सामवेद के आरण्यक** - (क) तवलकार आरण्यक (ख) छान्दोग्य आरण्यक

   (सामवेद की **जैमिनि शाखा** का तवलकारारण्यक है। इसको जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। सामवेद की कौथुम शाखा का पृथक् आरण्यक नहीं है। **छान्दोग्य उपनिषद्** कौथुम शाखा से सम्बद्ध है। इसके ही कुछ अंशों को छान्दोग्य आरण्यक कहा जाता है ।)
5. **अथर्ववेद के आरण्यक** - (क) गोपथ आरण्यक

ऋग्वेद के आरण्यक

वैदिक साहित्यानुसार चरणव्यूह, पातञ्जल महाभाष्य श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थों में निर्दिष्ट ऋग्वेद की कुल 21 शाखाओं में से वर्तमान में कतिपय शाखा तथा कतिपय ब्राह्मण ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं-

ऐतरेय आरण्यक, यह ऋग्वेद की ऐतरेय शाखा से सम्बन्धित है।

शांखायन आरण्यक, यह ऋग्वेद की शांखायन शाखा अपर नाम कौषतकीय शाखा से सम्बद्ध है।

ऐतरेय आरण्यक

- इसका सम्बन्ध ऋग्वेद से है। यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट है। ऐतरेय के अन्दर पाँच मुख्य अध्याय (आरण्यक) हैं, इन्हें प्रपाठक भी कहा जाता है। प्रपाठक अध्यायों में विभक्त है। इसके प्रथम तीन आरण्यक के रचयिता ऐतरेय, चतुर्थ के आश्वलायन तथा पंचम के शौनक माने जाते हैं।
- डॉक्टर कीथ इसे निरुक्त की अपेक्षा अर्वाचीन मानकर इसका रचनाकाल षष्ठ शताब्दी विक्रम पूर्व मानते हैं, परन्तु यह निरुक्त से प्राचीनतम है । ऐतरेय के प्रथम तीन आरण्यकों के कर्ता महिदास हैं इससे उन्हें ऐतरेय ब्राह्मण का समकालीन मानना न्यायसंगत है।
- इसका प्रकाशन 1876 ई. में सत्यव्रत सामश्रमी ने किया था। तदनन्तर ए. बी. कीथ ने 1909 ई. में अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था । इस पर सायण और शंकराचार्य ने भी भाष्य लिखे हैं। इस आरण्यक के विशिष्ट प्रसंग प्राणविद्या, प्रज्ञा का महत्त्व, आत्मस्वरूप का वर्णन, वैदिक अनुष्ठान, स्त्रियों का महत्त्व, शास्त्रीय महत्त्व और आचार संहिता के बारे में विस्तार से वर्णन है।

प्रत्येक आरण्यक (अध्याय) इसके निम्नवत् हैं -

आदि प्रस्तुत करना साथी यज्ञ में निश्चित करें कार्यों की निंदा करना ।

4. **विधि-यज्ञ** और उससे संबद्ध कार्यकलाप का विस्तृत विवरण बताना यज्ञ कब कहां कैसे किया जाएगा? मीमांसा दर्शन के शाबर भाष्य में शबरस्वामी ने इन्हीं विषयों को कुछ और विस्तृत करते हुए ब्राह्मण ग्रंथों के प्रतिपाद्य **विषयों की संख्या 10** बताई हैं-

यज्ञ में कोई कार्य क्यों किया जाता है इसका कारण बताना।

निर्वचन शब्दों की नियुक्ति बताना जैसे नदी शब्द करना, धातु से नदी शब्द बना

निंदा यज्ञ में निंदा निषिद्ध कर्मों की निंदा जैसे यज्ञ में असत्य भाषण निश्चित है असत्य भाषण को निंदा करते हैं।

प्रशंसा यज्ञ में विभिन्न कार्यों की प्रशंसा करना जैसे यज्ञो श्रेष्ठतमः कर्म- अर्थात् यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म है अतः अवश्य करना चाहिए इस प्रकार यज्ञ की प्रशंसा करना ।

किसी यज्ञ कर्म के विषय में कोई संदेह उपस्थित हो तो उसका निवारण करना, यह कार्य इस प्रकार से ही किया जाए। इसका स्पष्ट निर्देश करना।

विधि का अभिप्राय है यज्ञ क्रियाकलाप की पूरी विधि का विशद निरूपण । कौनसा कार्य पहले किया जाए तथा उसके बाद के कार्यों का तारतम्य से विवरण प्रस्तुत करना ।

इसके अर्थ के विषय में पर्याप्त मतभेद है प्रक्रिया का भाव है परार्थक क्रिया पर हित या परोपकार वाले कर्मों को कर्तव्यों का वर्णन इसमें इष्टापूर्त का समावेश है।

यज्ञ की विधि विभिन्न विधियों के समर्थन में किसी प्राचीन आख्यान या ऐतिहासिक घटना का वर्णन करना जैसे राजा के अभाव में जनता के बीच रहती थी।

कल्पना परिस्थिति के अनुसार कार्य की व्यवस्था करना । सायण ने इसका उदाहरण दिया है जितने घोड़े हों उतने जल भरे पात्र रखें।

कोई उपमा या उदाहरण देकर वर्ण्य विषय की पुष्टि करना। जैसे ऐतरेय ब्राह्मण में " चरैवेति" की पुष्टि में सूर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। सूर्य निरंतर चलता रहता है उस की तेजस्विता बनी रहती है।

षड्दर्शन

षड्दर्शन उन भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के मंथन का परिपक्व परिणाम है जो हजारों वर्षो के चिन्तन से उतरा और हिन्दू (वैदिक) दर्शन के नाम से प्रचलित हुआ। इन्हें आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है ।

यहाँ के ऋषि -महर्षियों ने सृष्टि की रचना, जीवन- मरण का चक्र, आत्मा- परमात्मा, स्वर्ग- नर्क की अवधारणा, पुनर्जन्म, जीवन के लक्ष्य इत्यादि सीमांत अवधारणाओं पर गहन चिंतन किया है ।

भारतीय धार्मिक ग्रंथों में मुक्ति का महत्व सदा अनन्य रहा है । सभी धर्मों में मुक्ति को ही जीवन के अंतिम लक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत किया गया है ।

इसी संबंध में प्राचीन भारत में मुक्ति की संविधाओं के तौर पर दर्शन के 6 मुख्य मार्ग विकसित हुए जिन्हें **षड्दर्शन** कहा जाता है ।

षड्दर्शन 6 प्रकार के होते हैं-

1. न्याय दर्शन
2. वैशेषिक दर्शन
3. संख्या दर्शन
4. मीमांसा दर्शन
5. योग दर्शन
6. वेदांत दर्शन

सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन प्राचीनतम दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक "महर्षि कपिल" है। आचार्य गौतम बुद्ध ने भी सांख्य दर्शन का अध्ययन किया। क्योंकि उनके गुरु आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे। उन्होंने गौतम बुद्ध को सांख्य का उपदेश दिया। जिससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह घर त्याग कर चले गए।

सांख्य दर्शन मुख्यतः दो (2) तत्वों को मानता है। 1. प्रकृति 2.पुरुष इन दो तत्वों से ही सांख्य दर्शन के अन्य (23) तत्वों की उत्पत्ति होती है। सांख्य में प्रकृति को अचेतन कहा गया है और वहीं पुरुष को चेतन। जब पुरुष का प्रतिबिंब (छाया) प्रकृति के ऊपर पड़ता है। तब सृष्टि प्रक्रिया आरंभ होती है। यह सांख्य दर्शन का मत है।

सांख्य दर्शन में तत्त्व

सांख्य दर्शन में 25 तत्व हैं। इन तत्वों का सम्यक् ज्ञान जीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करता है। सांख्य का अर्थ ही है- तत्वों का ज्ञान। जिससे जीव मुक्ति पा सके। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने सांख्य दर्शन का उपदेश अर्जुन को दिया। सांख्य दर्शन के विभिन्न आचार्य हुए। लेकिन आज के समय में सांख्य दर्शन का जो प्रामाणिक ग्रंथ मिलता है। वह ग्रंथ है- "सांख्य-कारिका"। इसका श्रेय आचार्य ईश्वर कृष्ण को जाता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी सांख्यकारिका में आचार्य कपिल के सूत्रों (सांख्यसूत्र) को कारिका बद्ध करके पाठकों के लिए सहज और अर्थ दृष्टि से भी सरल बनाया है। सांख्य-कारिका विभिन्न लेखकों, संपादकों द्वारा रचित है। लेकिन डॉ. विमला कर्नाटका द्वारा लिखित सांख्य-कारिका प्रचलित तथा बोधगम्य है।

सांख्य के 25 तत्वों का विवरण -

सांख्य दर्शन में क्रमशः 25 तत्त्व माने गए हैं। पच्चीस तत्त्व हैं- प्रकृति, पुरुष, महत् (बुद्धि), अहंकार, पंच ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु, श्रोत, रसना, घ्राण, त्वक्), पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ), मन, पंच- तंमात्र (रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)।

सांख्य दर्शन सूत्रबद्ध होने की वजह से पढ़ने में कठिन था। लेकिन उसका कारिकाबद्ध होने से पढ़ने में सुविधा हुई। जब तक सांख्य दर्शन सूत्रों में था, तब तक उसे कुछ विद्वान ही पढ़ पाते थे। लेकिन सूत्र से कारिका और कारिका से तत्त्व-कौमुदी के विकास ने सांख्य दर्शन को जीवित कर दिया और उसको अनेक विद्वान व छात्र सहर्ष पढ़ने लगे।

सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धांत -

सांख्य का मुख्य सिद्धांत सत्कार्यवाद है। जिससे सत् से सत् की उत्पत्ति आदि पांच हेतु माने गए हैं। सांख्य दर्शन ईश्वर को नहीं मानता, इसीलिए इसे निरीश्वरवाद भी कहते हैं। यह दर्शन पुरुष को आत्मा और प्रकृति को माया आदि नामों से पुकारा जाता है।

सांख्य दर्शन का सर्वोत्कृष्ट तत्त्व बुद्धि को माना गया है। जिसे हम महत् के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही हमें सत्य और असत्य का भान होता है। इसीलिए इसे विवेकी भी कहा गया है। सांख्य में बुद्धि के 8 धर्म बताये गए हैं- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य। बुद्धि के यह 8 धर्म ही मनुष्य को सद्गति व अधोगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं।

सांख्य दर्शन शास्त्र में मुक्ति -

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बताई गई है। 1. देह-मुक्ति 2. विदेह-मुक्ति। देह-मुक्ति का तात्पर्य है- शरीर की मुक्ति और विदेह-मुक्ति से तात्पर्य है- जन्म-मरण प्रक्रिया से सदैव के लिए मुक्ति व सूक्ष्म शरीर की मुक्ति।

सांख्य दर्शन को विभिन्न भारतीय दर्शनों में यत्र-तत्र सर्वत्र पढ़ा जा सकता है। श्रुति लेखानुसार- सभी दर्शनों की उत्पत्ति सांख्य दर्शन से मानी गई है। सर्व प्राचीन दर्शन होने का गौरव सांख्य दर्शन को ही प्राप्त है।

योगदर्शन

पतंजलि योगसूत्र का परिचय

योगदर्शन एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और साधकों के लिये परम उपयोगी ग्रंथ है। जिस प्रकार पूर्व में हमने महर्षि पतंजलि के **सम्पूर्ण जीवन परिचय** वाली पोस्ट में चर्चा की थी की योगसूत्र ग्रंथ महर्षि पतंजलिकृत सभी ग्रंथों में से एक है। इसमें अन्य दर्शनों की भांति खण्डन-मण्डन के लिये युक्तिवाद का अवलम्बन न करके सरलतापूर्वक बहुत ही कम शब्दों में अपने सिद्धांत का निरूपण किया गया है। इस ग्रंथ पर अब तक संस्कृत, हिंदी और अन्यान्य भाषाओं में बहुत भाष्य और टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं।

महर्षि पतंजलि ने **पातंजलि योगसूत्र** ग्रंथ को चार भागों अर्थात् चार अध्यायों में बाँटा है, जिन्हें पाद के नाम से जाना जाता है।

योग दर्शन के चार पाद -

1. समाधिपाद - 51 सूत्र
2. साधनपाद - 55 सूत्र
3. विभूतिपाद - 55 सूत्र
4. कैवल्यपाद - 34 सूत्र

इन चारों पादों का परिचय निम्नलिखित इस प्रकार है-

1. **समाधिपाद**

योगदर्शन के प्रथम पाद में योग के स्वरूप, लक्षण और योग की प्राप्ति के उपायों का वर्णन करते हुए **चित्तवृत्तियों** के पाँच भेद के साथ उनके लक्षण बतलाये गये हैं। वहाँ सूत्रकार ने निद्रा को भी चित्त की वृत्तिविशेष के अन्तर्गत माना है अन्य दर्शनकारों की भांति इनकी मान्यता में निद्रा वृत्तियों का अभावरूप अवस्था विशेष नहीं है। तथा विपर्ययवृत्ति का लक्षण करते समय उसे मिथ्याज्ञान बताया है।

अतः साधारण तौर पर यही समझ में आता है कि दूसरे पाद में 'अविद्या' के नाम से जिस प्रधान क्लेश का वर्णन किया गया है वह और चित्त की विपर्ययवृत्ति दोनों एक ही हैं; परंतु गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर यह बात ठीक नहीं मालूम होती। ऐसा मानने से जो-जो आपत्तियाँ आती हैं, उनका दिग्दर्शन सूत्रों की टीका में कराया गया है दृष्टा और दर्शन की एकतारूप अस्मिता-क्लेश के कारण का नाम 'अविद्या' है वह अस्मिता चित्त की कारण मानी गयी है)।

इस पाद के सत्रहवें और अठारहवें सूत्रों में समाधि के लक्षणों का वर्णन बहुत ही संक्षेप में किया गया है। उसके बाद इकतालीसवें से लेकर इस पाद की समाप्ति तक समाधि का कुछ विस्तार से फिर से वर्णन किया गया है, परन्तु विषय इतना गम्भीर है कि समाधि की वैसी स्थिति प्राप्त कर लेने के पहले उसका ठीक-ठीक भाव समझ लेना बहुत ही कठिन है।

2. **साधनपाद**

इस दूसरे पाद में अविद्यादि **पंच क्लेशों** को समस्त दुःखों का कारण बताया गया है, क्योंकि इनके रहते हुए मनुष्य जो कुछ भी कर्म करता है, वे सब के सब संस्काररूप से अन्तःकरण में इकट्ठे होते रहते हैं, उन संस्कारों के समुदाय का नाम ही कर्माशय है। इस कर्माशय के कारणभूत क्लेश जब तक रहते हैं, तब तक जीव को उनका फल भोगने के लिये नाना प्रकार की योनियों में बार-बार जन्मना और मरना पड़ता है एवं पापकर्म का फल भोगने के लिये घोर नरकों की यातना भी सहन करनी पड़ती है। पुण्यकर्मों का फल जो अच्छी योनियों की और सुखभोग संबंधी सामग्री की प्राप्ति है वह भी विवेक की दृष्टि से दुःख ही है।

अतः समस्त दुःखों का सर्वथा अत्यन्त अभाव करने के लिये क्लेशों का मूलोच्छेदन करना अत्यंत आवश्यक है। इस पाद में उनके नाश का उपाय निश्चल और निर्मल विवेकज्ञान को तथा उस विवेकज्ञान की प्राप्ति का उपाय योगसंबंधी आठ अंगों के अनुष्ठान को बताया है। महर्षि पतंजलि के अनुसार इसलिए साधक को चाहिए कि बताये हुए योगसाधनों का श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करे।

(4) गुण का सिद्धान्त (Theory of Traits) –

- वर्णों की उत्पति **गुणों के आधार** पर हुई है, यह विश्वास भी कुछ लोग करते हैं। इस विश्वास के अनुसार एक व्यक्ति किस वर्ण का सदस्य होगा यह इस बात पर निर्भर नहीं है कि उसका जन्म किस परिवार या वर्ण में हुआ है ।
- भारतीय मान्यता के अनुसार गुण **तीन प्रकार** के होते हैं- **सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण**,मनु के अनुसार जिस मनुष्य के स्वभाव में जिस गुण की प्रधानता होती है ।
- मनु का कथन है कि **ज्ञान सतोगुण का, अज्ञान तमोगुण का तथा राग-द्वेष रजोगुण** के लक्षण हैं । आत्मा का निर्मल पक्ष जो प्रीतियुक्त, प्रशान्त तथा प्रकाशरूप है ।
- फल प्राप्ति के उद्देश्य से कर्म करना, अधीरता तथा यशस्वी होने की इच्छा- ये रजोगुण के लक्षण हैं। क्षत्रियों में इस गुण का प्राधान्य रहा, इसीलिए उन्हें शासन-व्यवस्था लोक-रक्षा तथा शौर्य के कार्य सौंपे गए।
- इस प्रकार **सतोगुण प्रधान ब्राह्मण, रजोगुण प्रधान क्षत्रिय, तमोमिश्रित रजोगुण प्रधान वैश्य तथा तमोगुण प्रधान शूद्र** होता है ।

(5) जन्म का सिद्धान्त (Theory of Birth) –

- कुछ विद्वानों का कथन है कि **वर्ण का आधार जन्म है, न कि कर्म** । जो व्यक्ति जिस परिवार में जन्म लेता है उसी के अनुसार उसके वर्ण का निर्धारण होता है ।
- **डॉ. घुरिये** का कथन है कि **प्रारम्भ में केवल 'आर्य' और 'दास' ये दो वर्ण थे।** आर्य लोग जहां भी पाए गए वहां उन लोगों ने वहां के आदिवासियों को पराजित किया ।
- आर्यों ने यहां के मूल निवासियों को भी 'दास' कहकर पुकारा और अपने तथा उनके बीच अन्तर स्पष्ट करने के लिए 'वर्ण' शब्द का प्रयोग किया ।
- वर्ण-व्यवस्था के निर्णायक कारण या आधार के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। परन्तु इन मतभेदों का विश्लेषण करके हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं

वर्ण और जाति में भेद

वर्ण और जाति के परस्पर सम्बन्धों के आधार पर इन दोनों में पाए जाने वाले अन्तरों को निम्न क्रम से समझा जा सकता है-

वर्ण

'वर्ण'	जाति (Caste)
(1) शब्द **संस्कृत की 'वृ' धातु** से बना है जिसका अभिप्राय चुनने या अपनाने से है, अर्थात् वर्ण वह है जिसको व्यक्ति अपने कर्म व स्वभाव अनुसार चुनता है ।	(1) 'जाति' शब्द की व्युत्पत्ति **संस्कृत की 'जन' धातु से हुई** है जिसका अभिप्राय जन्म से है, अर्थात् जाति-व्यवस्था जन्म पर आधारित है ।
(2) वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को अपने कर्म व स्वभाव के अनुसार वर्ण चुनने की स्वतन्त्रता है।	(2) जाति प्रथा में जन्म से प्राप्त होने वाले अधिकारों को विशेष महत्त्व दिया जाता है ।
(3) वर्ण-व्यवस्था **लचीली एवं परिवर्तनशील व्यवस्था** है। ऐसा वर्णन मिलता है कि वैदिक काल में विभिन्न वर्गों में आपस में विवाह होते थे; खान-पान का कोई भेद-भाव नहीं था।	(3) जाति **जन्ममूलक** है और यही कारण है कि यह अपने सदस्यों के विवाह, खान-पान व्यवसाय आदि के प्रति कठोर रुख अपनाती है ।
(4) वर्ण की संख्या केवल चार (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) है ।	(4) जबकि जातियों की संख्या हजारों में है। जनगणना रिपोर्टों के अनुसार भारत में इस समय लगभग 4,000 से अधिक जातियाँ व उपजातियाँ हैं ।

वर्णों के कर्त्तव्य या 'वर्ण - धर्म (Duties of Varnas or 'Varna' Dharma)

हिंदू शास्त्रकारों ने विभिन्न वर्णों के कुछ निश्चित कर्त्तव्यों या 'धर्म' का भी निर्धारण किया है स्मृतियों के अनुसार चारों वर्णों के कुछ सामान्य 'धर्म या कर्त्तव्य भी हैं जैसे हिन्दू शास्त्रकारों ने विभिन्न वर्णों के कुछ निश्चित कर्त्तव्यों या 'धर्म का भी निर्धारण की वस्तु लेने से बचना,चरित्र एवं जीवन की पवित्रता को बनाए रखना, इन्द्रियों पर वित प्राणियों को हानि ने पहुंचाना, सत्य की खोज करना, अनधिकारपूर्वक किसी दूसरे **नियन्त्रण रखना, आत्मसंयम, क्षमा, ईमानदारी, दान** आदि सद्गुणों का अभ्यास करना । फिर भी प्रत्येक वर्ण के कुछ अलग-अलग कर्त्तव्य या 'धर्म भी हैं, इन्हीं को **वर्ण-धर्म** कहते हैं ।

मनु के अनुसार ये वर्ण-धर्म निम्न हैं-

(1) द्विजों में श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं । ब्राह्मण का आधार उसकी सात्विक वृत्ति तथा उसका निश्चल स्वभाव है । इसी दृष्टिकोण से मनुस्मृति में ब्राह्मणों के इन गुणकर्मों का उल्लेख या गया है - ब्राह्मण को चाहिए कि वह अपने तिरस्कार को विष के समान समझ हुआ उससे सदा डरता रहे और आदर को अमृत समझता हुआ उसकी सदा कामना करता रहे।

(2) मनु के अनुसार क्षत्रिय का प्रमुख कर्त्तव्य **प्रजा की रक्षा करना, युद्ध करना, दान देना, यज्ञ करना** आदि हैं।

(3) गाय-बैल आदि पशुओं की रक्षा करना, दान अग्निहोत्र आदि करना, व्यापार करना, ब्याज पर रुपया लेना-देना, और खेती करना - ये वैश्य के कर्त्तव्य कर्म हैं ।

(4) शूद्र का कार्य उपरोक्त तीन वर्णों की **बिना ईर्ष्या के सेवा करना** है ।

व्यक्ति एक ऐसे परिवार में क्यों जन्म लेता है जिसका कि पैशा निम्न है - इस प्रश्न का उत्तर 'कर्म' का सिद्धान्त दे

अध्याय – 5

धार्मिक आंदोलन

- **बौद्ध धर्म**
- बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध थे।**
  सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला।
- जन्म 563 ई.पू. - लुम्बिनी (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया
- बुद्ध की माता की मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था।
- पिता – शुद्धोधन
- बुद्ध का विवाह - यशोधरा से
  बुद्ध के पुत्र का नाम राहुल था।

बौद्ध धर्म के शीघ्र प्रसार के कारण

(1) महात्मा बुद्ध का प्रभावशाली व्यक्तित्व-महात्मा बुद्ध का जीवन आदर्शपूर्ण था। उनमें मानवीय गुणों की प्रचुरता थी। उनका हृदय दया, स्नेह और करुणा से परिपूर्ण था। अतः जो व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता था, वही उनसे प्रभावित होकर उनका अनुयायी बन जाता था।

(2) बौद्ध धर्म की सरल शिक्षाएँ- बौद्ध धर्म के सिद्धान्त सरल और व्यावहारिक थे। उन्होंने संसार के दुखों से छुटकारा पाने के लिए शुद्ध आचरण पर बल दिया। अन्य धर्मों में ऐसे सरल सिद्धान्त नहीं थे। अतः जनसाधारण ने बौद्ध धर्म को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

(3) जनसाधारण की भाषा में प्रचार- महात्मा बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं का प्रचार जनसाधारण की भाषा में किया जिससे उनकी शिक्षाओं का व्यापक प्रचार हुआ।

(4) **प्रचार शैली में रोचकता**-महात्मा बुद्ध की प्रचार शैली सरल, रोचक तथा सुबोध थी। प्रचार शैली की रोचकता के कारण भी महात्मा बुद्ध के उपदेशों का व्यापक प्रभाव पड़ता था।

(5) धर्म प्रचारकों का उत्साह- धर्म प्रचारकों ने बौद्ध धर्म को फैलाने में अनुपम त्याग और उत्साह का परिचय दिया। उन्होंने सब प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का दूर-दूर तक प्रचार किया बौद्ध प्रचारक भारत के कोने-कोने में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण एशिया के विभिन्न स्थलों में फैल गये।

(6) बौद्ध मठों का योगदान- बौद्ध मठों ने भी बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन बौद्ध संघों का संगठन लोकतन्त्रीय था।

(7) समानता की भावना- बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का एक कारण यह था कि इस धर्म में जाति तथा ऊंच-नीच का भेद-भाव न था। बौद्ध धर्म के द्वार सभी जातियों और सम्प्रदायों के लोगों के लिए खुले हुए थे। परिणामस्वरूप निम्न वर्ग के लोग भी बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इस धर्म को सहर्ष ग्रहण किया।

(8) राजकीय संरक्षण- बौद्ध धर्म को प्रारम्भ से ही अनेक गणराज्यों और राजतन्त्रों का संरक्षण प्राप्त हुआ। बिम्बिसार, अजातशत्रु तथा प्रसेनजित बुद्ध से प्रभावित थे। सम्राट अशोक ने भी बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया और उसके प्रचार व प्रसार में अपना तन-मन-धन लगा दिया।

(9) वैदिक धर्म की जटिलता-उत्तर वैदिक काल में वैदिक धर्म में अनेक कुरीतियों का समावेश हो गया था। अतः जब महात्मा बुद्ध ने हिंसात्मक यज्ञों, वैदिक कर्मकाण्डों और पुरोहितवाद की आलोचना की तो अनेक व्यक्ति उनके उपदेशों से प्रभावित होकर बुद्ध धर्म के अनुयायी बन गये।

(10) बौद्ध सभाओं तथा बौद्ध विश्वविद्यालयों का प्रभाव- महात्मा बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् बौद्धों की चार सभाएं समय-समय पर हुई। इन सभाओं के आयोजन से संगठन को शक्तिशाली बनाने की प्रेरणा मिली। इसी प्रकार **नालन्दा, विक्रमशीला तथा इदतपुरी के बौद्ध मठों ने भी बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योग दिया।**

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में
- सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- **वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।**
- इसी दिन से **गौतम बुद्ध तथागत** कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ।
  जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन- सारनाथ में

- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ।
- सर्वप्रथम अनुयायी –
  तपस्स जाट शुद्र
  कालिक
- प्रिय शिष्य- आनन्द

बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षु - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- **कुशीनारा में** सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष **8 भागों में** डाले गये जहां स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को **बुद्ध पूर्णिमा** भी कहते हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद-महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- **बुद्ध, धम्म, संघ**

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्हीं का कालान्तर में विस्तार होकर ये **अष्टांगिक मार्ग कहलाये।**
- भिक्षुओं का कल्याण मित्र

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बौद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म - कमल व साण्ड
गृहत्याग - घोड़ा
ज्ञान - पीपल
निर्वाण - पदचिन्ह
मृत्यु - स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में।
- **बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।**
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

4 सत्य

- सम्पूर्ण संसार दुखों से भरा हुआ है।
- समस्त दुखों का कारण इच्छा है।
- यदि इच्छा पर विजय प्राप्त कर ली तो समस्त दुख का अंत हो जायेगा।
- इच्छा पर विजय प्राप्त करने के अष्टांगिक मार्ग है।

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी।
   सुत्तपिटक विनयपिटक
   (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)
   अध्यक्ष - महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
   वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
   अध्यक्ष - सर्वकामिनी
3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में - अशोक
   पाटलिपुत्र में रचना रची गयी अभिधम्मपिटक (बुद्ध के दार्शनिक विचार)
   अध्यक्ष - मोग्गलिपुत्त तिस्स
4. **प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क**
   कुण्डलवन में हीनयान व महायान
   (कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)
   अध्यक्ष - वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत

- देवती तारा जो प्रज्ञा की अवतार हैं। कुछ मूर्तियों में बोधिसत्व के साथ दिखाई गयी हैं। इसे प्रज्ञापारमिता भी कहा जाता है।
- महायान के अनुयायी प्रज्ञापारमिता, मंजूश्री और अवलोकितेश्वर की उपासना करते थे।

बुद्ध काल में अर्थव्यवस्था और समाज

अर्थव्यवस्था

- 700 ई.पू. के आस-पास उत्तर प्रदेश एवं बिहार की जनता की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।
- पाणिनी की अष्टाध्यायी और सुतनिपात के अनुसार, खेत की दो या तीन बार जुताई होती थी।
- धान की रोपाई और लोहे के उपकरणों के ज्ञान ने कृषि उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।
- चावल उत्पादक मध्य गंगा घाटी में, गेहूँ उत्पादक ऊपरी गंगा घाटी की तुलना में अधिक उत्पादन होता था।
- उत्पादन अधिशेष से जनसंख्या वृद्धि संभव हुई। इसके अतिरिक्त उत्पादन में यज्ञ पर खर्च करने की प्रवृत्ति कम हो गई।
- सांख्यान गृह सूत्र में बैल द्वारा खेती करने, हल चलाने एवं मंत्रों के साथ समस्त कृषि प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का उल्लेख है।
- पाणिनी के समय खेतों का सर्वेक्षण करने वाले अधिकारी को क्षेत्रकार कहा जाता था।
- बौधायन के अनुसार, छः निवर्तन भूमि की उपज से एक परिवार का भरण-पोषण होता था। अतः इससे ज्ञात होता है कि भूमि-माप की इकाई निवर्तन कहलाती थी और एक निवर्तन डेढ़ एकड़ के बराबर होती थी।

फसल-

- सूत्र ग्रंथों में दो प्रकार के जौ- यव और यवानी, पाँच प्रकार के चावलों (कृष्ण ब्रिही, महाब्रीही, हायन, यवक और पष्टिक) का उल्लेख है।
- बौद्ध ग्रन्थों में ईख की खेती की चर्चा की गई है। प्राचीन बौद्ध एवं जैन साहित्य में शलिल (चावल) के 5 किस्मों की चर्चा की गई है (रक्त शलि, कालम शलि, गंधशलि, महाशलि)।
- प्राचीन बौद्ध साहित्य में खेत पति, खेत स्वामी या वथूपति की चर्चा की गई है।
- इसका अर्थ है-भूमि के अलग-अलग स्वामी होते थे।
- इससे यह संकेत मिलता है, भू व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना विकसित हो चुकी थी।
- कृषि में भी बड़े-बड़े फार्मों का विकास हुआ।
- माना जाता है कि 500 हलों से खेती की जाती थी। अब बौद्ध ग्रंथों के अनुसार कृषि में दासों, कर्मकारों एवं पस्सों को लगाया जाता था।

गृहपति

- वैदिक युग में याजक (यज्ञ करने वाला) और पशुचारक थे किन्तु छठी सदी ई.पू. में वे पहली बार विशाल पितृसत्तात्मक परिवार का मुखिया बन गए।
- उन्हें धन के कारण सम्मान प्राप्त हुआ। गृहपति राज्य की सेना को वेतन देता था और बुद्ध संघ की सेवा के लिए उसने 1250 गौ सेवकों को नियुक्त किया था। उसी तरह अनाथपिंडक संपन्न गृहपति था।

शिल्प

- इस काल में राजगृह में 18 प्रकार के शिल्पों की चर्चा की गयी है।
- शिल्पों का केवल विशिष्टीकरण हुआ शिल्पों का क्षेत्रीयकारण भी हुआ।
- वैशाली के सदलपट में कुंभकार की 500 दुकाने थीं।
- जुलाहों की भी अलग-अलग बस्तियां थीं जुलाहों का वार्ड तंतु बायधान कहलाता था।
- हाथी दांत का काम करने वाले दंतकारवीथि कहलाते थे।
- रंगरेजों का कार्य करने वाले रंगरेजकार विथि कहलाते थे।
- यह काल उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड चरण से जुड़ा हुआ था।
- इसी काल में 300 ई.पू. के आस-पास घेरेदार कुएं एवं पक्के ईंटों का प्रयोग होने लगा।
- धातु के आहत सिक्के का प्रथम प्रयोग 500 ई.पू. के आस-पास हुआ।
- आरंभ में आहत सिक्के चांदी के बनाये जाते थे किन्तु तांबे के भी होते थे।
- पंचमार्क सिक्के में धातु के टुकड़ों पर हाथी, मछली, सांड, अर्द्धचंद्र की आकृतियाँ बनाई जाती थीं।
- ये पूर्वी उत्तर प्रदेश, मगध और तक्षशिला में विशेष रूप से पाए गए हैं।
- कुछ अन्य सिक्कों की भी चर्चा हुई है यथा कर्षापण, पाद, माशक, काकणिक, सुर्वण (निष्क)। बिम्बिसार और अजातशत्रु के काल में राजगृह में पाँच मास एक पाद के बराबर होता था।
- पाणिनी के काल में निम्नलिखित सिक्के चलते थे-निष्क, पण, पाद, मास, शान (तांबा का एक सिक्का)।

व्यवसायिक संगठन

- श्रेणियों के पदाधिकारियों को चौधरी (प्रमुख) और जेठक (ज्येष्ठक) और भाण्डागारिक कहा जाता था।
- बिना श्रेणियों के संगठित उद्योगों का संचालन ज्येष्ठक करते थे।
- व्यापार प्रमुख या मुखिया 'महासेठी' कहलाता था। कारवाँ (व्यापारियों का काफिला) सितारों और कौए की सहायता से थलनिय्याम के नेतृत्व में चलता था।
- बुद्ध काल में आर्थिक संघों को बहुत स्वायत्तता प्राप्त थी।

- वे वस्तुओं के मूल्य निश्चित करते थे। निजी सदस्यों पर गहरी पकड़ थी और इसके लिए उन्हें राज्य की ओर से भी मान्यता प्रदान की गई थी।
- वे भ्रष्ट सदस्यों का निष्कासन कर सकते थे।
- किसी भी स्त्री को बौद्ध संघ की सदस्यता के लिए, अपने पति के अतिरिक्त पति के संघ की अनुमति भी लेनी पड़ती थी।
- प्रारंभिक धर्म सूत्रों में ऋणों पर ब्याज 1¼ प्रतिशत प्रतिमास (15 प्रतिशत वार्षिक) था। वाणिज्य व्यापार विकसित अवस्था में था।
- एक मार्ग ताम्रलिप्ति से पाटलिपुत्र एवं श्रावस्ती के माध्यम से उज्जैन होते हुए भड़ौंच से जुड़ता था।
- दूसरा मार्ग मथुरा-राजस्थान-तक्षशिला से जुड़ा था।
- व्यापार की वृद्धि के लिए पांडय सिद्धि संस्कार किया जाता था।
- इसमें सोम की पूजा की जाती थी।

नगरों का विकास-

- बुद्ध काल को द्वितीय नगरीकरण का काल भी कहा जाता है।
- प्रथम नगरीकरण सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान हुआ था।
- तैतरीय अरण्यक में पहली बार नगर की चर्चा की गई है।
- उस काल में कुल 60 नगर थे जिनमें श्रावस्ती जैसे 20 नगर थे।
- बुद्ध काल में 6 बड़े नगर या महानगर थे यथा, राजगृह, चंपा, काशी, श्रावस्ती, साकेत, कौशांबी।

समाज

- इस काल की सामाजिक जानकारी हमें ब्राह्मण साहित्यों से मिलती है।
- उपनिषदों के पश्चात् ब्राह्मण साहित्य का एक बड़ा भाग सूत्र के रूप में लिखा गया। सूत्र साहित्य की रचना बौद्ध धर्म के प्रचार का मुकाबला करने के लिए हुआ था।
- सूत्र साहित्य में कल्प सूत्र का विशेष महत्त्व है।
- कल्प सूत्र तीन भागों में विभाजित हैं- स्रौत सूत्र, गह्य सूत्र और धर्म सूत्र।
- आगे सूत्रों की ही भांति स्मृतियों में भी सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था का प्रतिपादन हुआ। फिर भी दोनों में अन्तर है।
- सूत्र साहित्य गद्य और पद्य दोनों में है जबकि स्मृति साहित्य केवल पद्य में है।
- सूत्र और स्मृति साहित्य मिलकर शास्त्र कहे जाते हैं।
- गौतम धर्मसूत्र सबसे प्राचीन माना जाता है।
- प्रारंभ में गौतम, बौधायन, वशिष्ठ एवं अपास्तम्ब के धर्मसूत्र लिखे गए।
- गौतम एवं वशिष्ठ उत्तर भारत के हैं जबकि बौधायन एवं अपास्तम्ब दक्षिण भारत के।
- कतिपय मुद्दों पर इन सूत्रकारों के बीच भी मतभेद है। उदाहरण के लिए गौतम एंव बौधायन आठ प्रकार के विवाहों की चर्चा करता है जबकि अपास्तम्ब के सूत्र केवल छः प्रकार के विवाहों का जिक्र करते हैं।
- उसी तरह बौधायन उत्तराधिकार में बड़ा पुत्र को एक बडे अंग दिया जाने का हिमायत करता है जबकि अपास्तम्ब इस तथ्य को स्वीकार नहीं करता है।
- इसी प्रकार गौतम ब्राह्मण को विशिष्ट स्थिति में ब्याज पर धन देने का अधिकार देता है अर्थात् अगर वह किसी मध्यस्थ के माध्यम से किया जाय।
- फिर वह ब्राह्मण को कृषि एंव वाणिज्य व्यापार करने का अधिकार देता है। दूसरी तरफ बौधायन महत्वपूर्ण गतिविधि समुद्र-यात्रा की निन्दा करता है तथा उसें अधर्म करार देता है।
- इस काल में वर्ण व्यवस्था का जन्म हो गया।
- समाज का कबिलाई ढाँचा टूट गया और सूत्र साहित्य के द्वारा जाति पर आधारित समाज को नियमबद्ध करने की कोशिश की गई।

ब्राह्मण- यज्ञ की प्रतिष्ठा के साथ समाज में ब्राह्मणों का दर्जा सर्वश्रेष्ठ हो गया। महात्मा बुद्ध ने ब्राह्मणों को 5 वर्गों में विभाजित किया है-

1. ब्रह्म समां (ब्रह्मा के समान)
2. देव समां (देवताओं के समान)
3. मर्यादा- (जो अपने जातीय गौरव का पालन कर रहा हो)
4. सभिन्न मर्यादा- (जो अपनी जातीय मर्यादा से च्युत हो चुका है)
5. ब्राह्मण चांडाल- वह ब्राह्मण जो चांडाल के समान हो।

- राजा अन्य वर्णों का शासक था परन्तु ब्राह्मण वर्ग का नहीं।
- ब्राह्मणों को किसी प्रकार का शारीरिक दंड नहीं दिया जाता था और वे कर से भी मुक्त होते थे।
- एक ही अपराध के लिए चारों वर्णों को अलग-अलग सजाएँ निर्धारित की गयी थीं।
- ब्राह्मणों को सबसे कम एवं शूद्रों को सबसे अधिक सजा मिलती थी।
- उसी तरह ब्याज की राशि भी अलग-अलग लगती थी।
- क्षत्रिय वर्ण की प्रतिष्ठा अब इसलिए बढ़ गई थी कि अब लोहे के उपकरण युद्धास्त्रों के रूप में प्रयुक्त होने लगे थे।
- उसी तरह कृषि उपकरण और उत्पादन में विकास से वैश्य वर्ण की आर्थिक क्षमता भी बढ़ गई और बड़े-बड़े गृहपति अस्तित्व में आए।

शूद्र की स्थिति- गौतम ने शूद्र को अनार्य कहा है। पाणिनी ने शूद्रों को दो वर्गों में विभाजित किया है,
(1) अनिर्वासित (अवहिष्कृत) और
(2) निर्वासित (बहिष्कृत)।

- ब्राह्मण शूद्रों का स्पर्श किया हुआ भोजन नहीं करते थे।

तृतीय संगीति	250/2। ई.पू.	पाटलिपत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(।) हीनयान, (2) महायान

बौंध धर्म के पतन के कारण-

जिस प्रकार बौद्धधर्म के विकास को अनेक कारणों ने प्रभावित किया था, उसी प्रकार इसके पतन के लिए भी अनेक कारण उत्तरदायी थे। इनमें प्रमुख कारण निम्नलिखित

।. बौद्धधर्म में प्रविष्ट बुराइयाँ

बौद्धधर्म का उन्दव एवं विकास ब्राह्मणधर्म में प्रचलित दुर्गुणों की प्रतिक्रिया का परिणाम था। इसलिए, आरम्भ में इस धर्म को जनता का समर्थन मिला, परन्तु कालांतर में इस धर्म में भी वे ही दुर्गुण प्रविष्ट हो गए, जिनका इसने विरोध किया था। फलतः यह अपनी उपयोगिता और लोकप्रियता खो बैठा। बुद्ध के पश्चात इस धर्म में भी अनेक आडंबरों का प्रवेश हो गया। महायानियों ने बुद्ध को एक देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया, उनकी मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा करने लगे। इतना ही नहीं, अनेक वैदिक देवताओं को भी बौद्धों ने अपना लिया। 6-7वीं शताब्दी से तांत्रिक प्रभाव के कारण इसका स्वरूप और भी विकृत और दूषित हो उठा। वस्तुतः बौद्धधर्म के विकास ने बौद्धधर्म और ब्राह्मणधर्म के विभाजन को मिटा दिया। यौगिक क्रियाओं के संपादन, धार्मिक क्रियाकलाप और अनुष्ठानों तथा मंत्रों ने हिन्दूधर्म और बौद्धधर्म को समान स्तर पर ला दिया। फलतः बौद्धधर्म अपना आकर्षण खो बैठा। तथाकथित नए धर्म की तरफ आकृष्ट होने की अपेक्षा जनता ने नव-ब्राह्मणधर्म को ही अपनाना उचित समझा।

2. संघ का भ्रष्टाचारपूर्ण जीवन

आरम्भ में बौद्धसंघ का संगठन धर्मप्रचार हेतु किया गया था। संघ के सदस्यों के लिए आचरण संबंधी कठोर नियम बनाए गए थे, जिससे सदाचारी जीवन व्यतीत करते हुए वे धर्म का प्रचार कर सकें; परन्तु बौद्धधर्म के स्वरूप में परिवर्तन होने से संघीय जीवन में भी बदलाव आया। इस परिवर्तन के अनेक कारण थे। सबसे प्रमुख कारण था- इन संघों को दान में मिलनेवाला धन। धनी व्यापारियों के दान से संघ साधनसंपन्न हो गए।

3. फलतः बौद्ध भिक्षु आदर्शमय जीवन त्याग कर भोग

विलास की जिंदगी व्यतीत करने लगे। संघ में स्त्रियों के प्रवेश ने पतन की प्रक्रिया और भी तेज कर दी। भिक्षु-भिक्षुणी सदाचारी जीवन व्यतीत न कर भ्रष्टाचारी बन गए। वज्रयान-संप्रदाय के विकास ने शारीरिक सुख एवं मादक द्रव्यों के सेवन को सहज और व्यावहारिक बना दिया। फलतः संघ के सदस्यों का जीवन-दर्शन ही बदल गया। संघ परस्पर विवाद और कलह भी अड्डे बन गए। इन कारणों से जन-समुदाय का विश्वास और उनकी श्रद्धा बौद्धधर्म से समाप्त हो गई और धीरे-धीरे वे अपना महत्व खो बैठे।

4. नए-नए संप्रदाय का उदय

बौद्धधर्म के पतन का एक प्रधान कारण था इसकी एकता का खंडित होना। बुद्ध की मृत्यु के पश्चात बौद्धों में आपसी विभेद उठ खड़ा हुआ। वैशाली की सभा में ही यह विवाद प्रकट हुआ. जिसके परिणामस्वरूप स्थविरवादियों और महासंधियों का उदय हुआ। दोनों के विभेद चौथी सभा में स्पष्ट रूप से ऊभरकर सामने आए। फलतः बौद्धधर्म दो प्रमुख संप्रदायों- हीनयान और महायान में विभक्त हो गया। धीरे-धीरे हीनयान का प्रभाव कम होता गया और यह भारत से विलुप्त हो गया। महायान भी अपने वास्तविक स्वरूप में नहीं बना रह सका। आठवीं शताब्दी से तांत्रिक प्रभाव के कारण इसका स्वरूप भी परिवर्तित हो गया। प्रमुख संप्रदायों के अतिरिक्त अन्य छोटे बड़े संप्रदायों का भी उदय हुआ। इनके आपसी विरोध और कलह ने जनता को इस धर्म से विमुख कर दिया और इसका पतन अवश्यंभावी बना दिया।

5. संस्कृत का सहारा लेना

आरंभिक अवस्था में बोद्धधर्म की अपार सफलता का एक कारण यह था कि इसने जनसाधारण की भाषा-पाति के माध्यम से प्रचार कार्य किया। बौद्धों के ग्रंथ भी पाति-भाषा में ही लिखे गए थे। अतः जनसाधारण के लिए बौद्धधर्म सरत और ग्राम बना रहा, परन्तु कालांतर में महायान सम्प्रदाय के उदय के पश्चात बौद्धों ने भी दुरूह और कठिन संस्कृत भाषा का सहारा लिया। बौद्धग्रंथों की रचना भी संस्कृत में होने लगी। इससे इसका व्यापक और लोकप्रिय स्वरूप कमजोर पड़ने लगा। वज्रयान-संप्रदाय के उदय के साथ बौद्धों का संस्कृत से संबंध और भी गहरा हो गया। जनसाधारण धर्म की गूढ़ बातों को समझने में असफल रहा और उसने इस धर्म से अपना संबंधविच्छेद कर लिया।

6. राज्याश्रय की समाप्ति

राज्याश्रय की समाप्ति से भी बौद्धधर्म के विकास को गहरा धक्का लगा। प्रारम्भ में राजकीय संरक्षण के कारण इसे फैलने में बहुत मदद मिली थी। अशोक और कनिष्क ने इसे अपनाकर इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके पश्चात कोई भी ऐसा शासक नहीं हुआ, जो इस धर्म के विकास में पूरी अभिरुचि लेता। उलटे शुंग और गुप्त शासकों ने ब्राह्मणधर्म को प्रश्रय दिया। यद्यपि हर्षवर्द्धन ने पुनः बौद्धधर्म को अपनाकर इसकी प्रतिष्ठा स्थापित करने की कोशिश की,

- जैन धर्म के दो प्रकार के शील व्रत हैं। (1) गुणव्रत (2) शिक्षाव्रत
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी ने पावापुरी में जैनसंघ की स्थापना की थी।
- जैन धर्म के सन् स्याद का अर्थ है, शायद है भी और नहीं भी
- स्यादवाद सप्तभंगी ज्ञान को कहते हैं।
- न्यायवाद का संबंध जैन धर्म से है।
- महावीर स्वामी के शिष्य मक्खलीपुत्र गॉशाल ने आजीविक सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
- रणथम्भौर के जैन मन्दिर का शिखर पृथ्वीराज चौहान ने बनवाया था।
- जैन धर्म का सर्वाधिक प्रचार प्रसार व्यापारी वर्ग में हुआ।
- जैन धर्म के समर्थक राजाओं में उदायिन, बिम्बिसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, एवं खारवेल का उल्लेख मिलता है।
- स्थापत्य कला में जैनियों के महत्त्वपूर्ण योगदान के रूप में हाथीगुम्फा मन्दिर, (ओडिशा) दिलवाड़ा मन्दिर (माउन्ट आबू राजस्थान) गोमतेश्वर मन्दिर (कर्नाटक) पार्श्वनाथ मन्दिर (खजुराहो) आदि उल्लेखनीय है।

प्रमुख जैन तीर्थकर एवं उनके प्रतीक चिह्न
(Prominent जैन Tirthankaras and their Icons)

न तीर्थकरों के नाम	क्रम	प्रतीक चिह्न
ऋषभदेव (आदिनाथ)	प्रथम	-साँड (वृषभ)
अजित नाथ	द्वितीय	हाथी
सभवनाथ	तृतीय	घोड़ा (अश्व)
सुपार्श्वनाथ	सप्तम	स्वस्तिक
शांतिनाथ	सोलहवें	हिरण
मल्लिनाथ	उन्नीसवें	जल कलश
नेमिनाथ	इक्कीसवें	नीलकमल
अरिष्टनेमि	बाईसवें	शंख
पार्श्वनाथ	तेईसवें	सर्प
महावीर	चौबीसवें	सिंह

भगवान महावीर के बाद
भगवान महावीर के पश्चात इस परंम्परा में कई मुनि एवं आचार्य भी हुये हैं, जिनमें से प्रमुख हैं-
भगवान महावीर के पश्चात 62 वर्ष में तीन केवली (527-465 BC)
आचार्य गौतम गणधर (607-515 BC)
आचार्य सुधर्मास्वामी (607-507 BC)
आचार्य जम्बूस्वामी (542-465 BC)
इसके पश्चात 100 बर्षो में पॉच श्रुत केवली (465-365 BC)
आचार्य भद्रबाहु- अंतिम श्रुत केवली (433-357)
आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी (200 AD)
आचार्य उमास्वामी (200 AD)
आचार्य समन्तभद्र
आचार्य पूज्यपाद (474-525)
आचार्य वीरसेन (790-825)
आचार्य जिनसेन (800-880)
आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

जैन धर्म से संबंधित पर्वत (Mountains related to जैनism)

कैलाश पर्वत	ऋषभदेव का शरीर त्याग
सम्मेद पर्वत	पार्श्वनाथ का शरीर त्याग
वितुलांचल पर्वत	महावीर का प्रथम उपदेश
माउंट आबू पर्वत	दिलवाड़ा जैन मंदिर
शत्रुंजय पहाड़ी	अनेक जैन मंदिर

जैन धर्म के पतन के कारण निम्नलिखित थे-

- **ब्राह्मण धर्म से गहरा मतभेद-** जैन धर्म का ब्राह्मण धर्म से गहरा विरोध था तथा ब्राह्मणों ने भी इस धर्म का सदैव विरोध किया उनके विरोध के कारण जैन धर्म का महत्त्व समाप्त हो गया। अजयपाल के शासनकाल (1174-76) तक जैनियों के मंदिर अपनी गरिमा को पूर्णतया समाप्त कर दिया था।
- **सिद्धांतों की कठोरता-** इस धर्म के सिद्धांत अत्यंत कठोर थे, जिनका सर्वसाधारण लोग सुगमतापूर्वक पालन नहीं कर सकते थे। उदाहरणार्थ- अहिंसा का कठोर सिद्धांत सभी नहीं अपना सकते थे। कठोर तप करके सभी शारीरिक कष्टों को सहन नहीं कर सकते थे।
- **राजकीय आश्रय का अभाव-** अशोक, कनिष्क आदि जैसे अनेक महान नरेश हुए जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार में अपना जी-जान लगा दिया। लेकिन जैन धर्म को ऐसे महान नरेश नहीं मिले। जैन धर्म के पतन का प्रमुख कारण यही था कि इस धर्म को राजकीय आश्रय नहीं मिला।
- **अहिंसा** - जैन धर्म के पतन का एक प्रमुख कारण उसके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा का अव्यवहारिक स्वरूप था। जिस रूप में अहिंसा के प्रतिपालन का विचार प्रस्तुत किया गया

बिहार	नट - नाटिन, घुमकड़िया, कीर्तनिया, पंवारियाँ, सोहराई, सामा, चकेवा, जात्रा
उत्तर प्रदेश	डांगा, झींका, छाऊ, लुझरी, झोरा, कजरी, नौटंकी, थाली, जट्टा
केरल	भद्रकली, पायदानी, कुड़ीअट्टम, कालीअट्टम, मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी, गम्भीरा, जलाया, बाउल नृत्य, कथि, जात्रा
नागालैण्ड	कुमीनागा, रेंगमनागा, लिम, चोंग, खेवा
मणिपुर	संकीर्तन, लाईहरीबा, थांगटा की तलम, बसन्तराम, राखाल
मिजोरम	चेरोकान, पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ, पंथी, राउत, कर्मा, फुलकी डोरला, सरहुल, पाइका, नटुआ, छऊ
ओडिशा	अग्नि, डंडानट, पैंका, जट्टूर, मुद्दारी, आया, सवारी, छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा, छपेली, छोलिया, झुमैलो, जागर, कुमायूँ नृत्य, चौफल, छोलिया
कर्नाटक	यक्षगान, भूतकोला, वीरगास्से, कोडावा
आन्ध्र प्रदेश	घण्टा मर्दाला, बतकम्मा, कुम्मी, छड़ी, सिद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा, रहस, राउत, सरहुल, बार, नाचा, घसिया बाजा, पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम, कुम्मी कारागम्
अरुणाचल प्रदेश	युद्ध नृत्य, **लायन एंड पीक डांस, रिखमपाड़ा नृत्य, बुईआ नृत्य, खांपटी नृत्य, बारडो छम, तापु नृत्य, दामिंडा डांस, पोंग नृत्य,**

प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक	
वाद्य यंत्र	**वादक**
बाँसुरी	हरिप्रसाद चौरसिया, रघुनाथ सेठ, पन्नालाल घोष, प्रकाश सक्सेना, देवेन्द्र मुक्तेश्वर, प्रकाश बढ़ेरा, राजेन्द्र प्रसन्ना
वायलिन	बालमुरली कृष्णन, गोविन्दस्वामी पिल्लई, टी एन कृष्णन, आर पी शास्त्री, संदीप ठाकुर, बी शशि कुमार, एन राजम
सरोद	अली अकबर खाँ, अलाउद्दीन खाँ, अशोक कुमार राय, अमजद अली खाँ
सितार	पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ
शहनाई	बिस्मिल्ला खाँ, शैलेश भागवत, अनंत लाल, भोलानाथ तमन्ना, हरिसिंह
तबला	अल्ला रक्खा, जाकिर हुसैन, लतीफ खाँ, गुदई महाराज, अम्बिका प्रसाद
हारमोनियम	रवीन्द्र तालेगांवकर, अप्पा जुलगावकर, महमूद ब्रह्मस्वरूप सिंह, एस. बालचन्द्रन, असद अली, गोपालकृष्ण
वीणा	पं. शिवकुमार शर्मा, तरुण भट्टाचार्य
सारंगी	पं. रामनारायण, ध्रुव घोष, अरुण काले, आशिक अली खाँ, वजीर खाँ, रमजान खाँ
गिटार	विश्वमोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबरा, केशव तालेगांवकर, जलिन मजूमदार

लोककला शैलियाँ

शैली	राज्य
रंगोली	महाराष्ट्र / गुजरात
अल्पना	पश्चिम बंगाल
मण्डाना, मेहँदी	राजस्थान
अरिपन, गोदना	बिहार
रंगवल्ली	कर्नाटक
ऐपण	उत्तराखंड
अट्टूपना	हिमाचल
चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
कलमकारी, मुगगु	आंध्रप्रदेश
फुलकारी	हरियाणा
सथिया	गुजरात
कोल्लम	तमिलनाडु
कालम	केरल

वास्तुकला शैलियाँ

शैली	विशेषता	नमूने
नागर शैली	चतुर्भुजाकार भवन	सूर्य मन्दिर (कोणार्क), जगन्नाथ मन्दिर (पुरी), शैली भवन कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो), दिलवाड़ा जैन मन्दिर (माउण्ट आबू)
द्रविड शैली	गोलाकार भवन	कैलाश मन्दिर (काँची), रथ मन्दिर (मामल्लापरम), शैली भवन वृहदेश्वर मन्दिर (तंजौर)
बेसर शैली	आयताकार भवन	कैलाश मन्दिर (एलोरा), दशावतार मंदिर (देवगढ़ शैली भवन झाँसी)

महोत्सव/ त्यौहार का नाम	संबंधित राज्य
दुर्गा पूजा	पश्चिम बंगाल
हल पुन्हिया, रोहिणी, टुशु महोत्सव	झारखंड
भगोरिया हाट महोत्सव, मालवा उत्सव, तानसेन साहित्य महोत्सव, खजुराहो महोत्सव	मध्य प्रदेश
किचेरी महोत्सव (मकर सक्रांति)	उत्तर प्रदेश
लुइ-नगाई-नी महोत्सव	नागालैंड
नोंगक्रेम महोत्सव, वांगला महोत्सव, चेरी ब्लॉसम महोत्सव	मेघालय
कम्बाला पर्व	कर्नाटक
ऊंट महोत्सव,	बीकानेर, राजस्थान
हाथी महोत्सव	जयपुर, राजस्थान

सारांश

- सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थान हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगर थे।
- सिंधु सभ्यता के सभी केंद्रों में काँसे की ढ़लाई का काम बहुतायत में होता था।
- सिंधु घाटी सभ्यता से पशुपति मुद्रा प्राप्त हुई है, जिसमें केंद्र में मानव आकृति तथा चारों ओर कई जानवर बने हैं।
- बुद्ध की मृत्यु कुशीनगर में हुई, जो कि मल्लाओं की राजधानी थी।
- साँची के स्तूप को UNESCO ने 1989 में World Heritage Site में भी शामिल किया है।
- नागर शैली हिमालय और विंध्य पहाड़ों के बीच विकसित हुई।
- द्रविड़ शैली कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच की भूमि क्षेत्र में विकसित एवं प्रचलित हुई।
- वेसर शैली विंध्य पहाड़ों और कृष्णा नदियों के बीच के प्रदेश में प्रचलित हुई।
- द्रविड़ीय शैली स्थापत्य में स्तंभ और प्लास्टर का प्रचुर प्रयोग होता है।
- मध्यप्रदेश के खजुराहो मंदिर को 1986 ई. में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा प्रदान किया गया था।
- मौर्य युग में काष्ठकला अपने विकास की पराकाष्ठा पर पहुंच गई थी।
- अशोक के स्तंभ एकाश्मक तथा बिना चौंकी या आधार के भूमि पर टिकाए गए हैं।
- बराबर पहाड़ी की चौथी गुफा को 'विश्व झोपड़ी' कहा जाता है।
- साँची के स्तूप का पता सन् 1818 ई. में 'जनरल टायलर' ने लगाया था।
- नालंदा के भित्तिचित्रों के निर्माण की प्रेरणा अजंता और बाघ की गुफाओं से ली गई है।
- गुप्त काल स्थापत्य कला, साहित्य और संस्कृति के लिए स्वर्ण युग कहा गया है।
- कालिदास के चार काव्य (ऋतुसंहार, कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंश) तथा तीन नाटक (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तलम्) प्राप्त हुए हैं।
- कल्प से तात्पर्य कर्मकांड से है अर्थात् विधि नियम।
- स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं, यह अधिकांशतः पद्य में लिखी गई है।
- भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की तथा माघ ने शिशुपाल वध नामक महाकाव्य की रचना की।
- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र सबसे पहले पुराना तथा प्रमाणिक ग्रंथ है, जो नाट्यशास्त्र का पंचम वेद भी कहलाता है।
- 600 ई. में वाग्भट्ट ने 'अष्टांगहृदय' की रचना की।
- बौद्ध धर्म का वैधानिक साहित्य पालि में है, जिसे त्रिपिटक कहा जाता है। जो कि विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक है।
- बौद्धों की गीता नाम से प्रसिद्ध 'धम्मपद' का संबंध सुत्त पिटक नामक दूसरे बौद्ध धर्म महाग्रंथ से है।
- प्राकृत भाषा में जैनों का प्रचुर साहित्य लेखन हुआ, जिसे जैन आगम कहते हैं।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. कितनी वेदिकाएँ 'सोहन' संस्कृति स्थल से प्राप्त हुई हैं?

A 2 B. 3
C. 4 D. 5

उत्तर – D

प्रश्न-2. निम्नलिखित में से किस सैंधव स्थल का नगर तीन भागों (गढ़ी मध्य व निचला) नगर में विभक्त था?

A कालीबंगा B. सुरकोटड़ा
C. धौलावीरा D. हड़प्पा

उत्तर – C

प्रश्न-3. सिंधु घाटी के निवासियों की सभ्यता को जानने का मूल स्रोत है वहाँ पाई गई -

A मोहरें
B. बर्तन, जेवर, हथियार तथा औजार
C. मंदिर
D. लिपि उत्तर – B

प्रश्न-4. जन्म से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान है

A जातकर्म B. व्रतादेश
C. समावर्तन D. सीमन्तोन्नयन उत्तर – D

प्रश्न-5. बुद्ध की 80 फीट ऊँची प्रतिमा जो बोधगया में है, निर्मित की गई थी -

A जापानियों द्वारा B. थाई लोगों द्वारा
C श्रीलंकाइयों D. भूटानियों द्वारा उत्तर – A

प्रश्न-6. निम्नलिखित अभिलेखों में से किस लेख में 'अशोक' का नाम उल्लेखित है?

A भाब्रू अभिलेख
B. तेरहवाँ शिलालेख
C. मास्की लघु शिलालेख
D. रुम्मिनदेई स्तम्भ लेखउत्तर – उतर - C

प्रश्न-7. कलिंग युद्ध की विजय तथा क्षतियों का वर्णन अशोक के किस शिलालेख में है?

A शिलालेख I B. शिलालेख II
C. शिलालेख XII D. शिलालेख XIII

उत्तर – D

प्रश्न-8. मौर्ययुगीन शिल्प कला का श्रेष्ठ उदाहरण है -

A. रामपुरवा का पाषाण वृषभ
B. मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति
C. विदिशा की मकरवाहिनी की मूर्ति
D. कौशांबी की सूर्य मूर्ति उत्तर – A

प्रश्न-9. भारतीय और यूनानी कला शैली के मिश्रण से किस कला शैली की उत्पत्ति हुई?

A. अमरावती कला शैली
B. गांधार कला शैली
C. मथुरा कला शैली
D. मधुबनी कला शैली उत्तर – B

प्रश्न-10. मंदिरों का नगर कहा जाता है?

A एहोल B. पट्टड़कल
C. मान्यखेट D. वेंगी

उत्तर – A

प्रश्न-1. निम्न में से कौनसा वेद रागों (मेलोडीज) का संग्रह है?

A ऋग्वेद B. यजुर्वेद
C. सामवेद D. अथर्ववेद उत्तर – C

प्रश्न-2. प्रसिद्ध गायत्री मंत्र किसमें उल्लेखित है?

A कठोपनिषद् B. छांदोग्य उपनिषद्
C. ऋग्वेद संहिता D. ऐतरेय ब्राह्मण उत्तर – C

प्रश्न-3. 'त्रिपिटक' ग्रंथ किस धर्म से संबंधित है?

A वैदिक B. बौद्ध
C. जैन D. शैव उत्तर – B

प्रश्न-4. इंडिका का लेखक कौन था?

A. चाणक्य B. सिकंदर
C. मेगस्थनीज D. सेल्यूकस उत्तर –C

प्रश्न-5. 'अरमाईक' क्या है?

A. स्थान B. कला
C. भाषा D. लिपि उत्तर – **D**

प्रश्न-6. संगम साहित्य किस भारतीय भाषा से जुड़ा है ?

A तमिल B. तेलुगू
C. मराठी D. बंगाली उत्तर – A

प्रश्न-7. अष्टाध्यायी का लेखक था?

A वराहमिहिर B. कालिदास
C. पाणिनी D. बलराम उत्तर – C

प्रश्न-8. पंचतंत्र के लेखक हैं?

A विष्णु शर्मा B. प्रेमचंद्र
C. सूरदास D. कालिदास उत्तर – A

प्रश्न-9. निम्न में से कौनसी पुस्तक कालिदास ने नहीं लिखी है?

A अभिज्ञान शकुंतलम् B. रघुवंश
C. मालविकाग्निमित्र D. देवी चंद्रगुप्तम्

उत्तर – D

प्रश्न-10. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता कौन थे?

A भरत मुनि B. नारद मुनि
C. झंडु मुनि D. व्यास मुनि

उत्तर – A

मुख्य परीक्षा

1. **प्राचीन भारत के किन तीन ग्रंथों को प्रस्थान त्रयी कहा जाता है?**
2. **प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध लिखिए।**

- चालीसा द्वारा इल्तुतमिश के बाद के 30 वर्षों में उसके वंश के 5 शासक बनाये गये और मारे गये। यह साजिश का केन्द्र था और इसी के कारण सुल्तान का पद गौरवहीन था।

सुल्तान	बलबन को प्राप्त पद
इल्तुतमिश	खासदार
रजिया	अमीर-ए-शिकार
बहरामशाह	अमीर-ए-आखुर (अश्वशाला का प्रधान)
समूद शाह	अमीर-ए-हाजिब (विशेष सचिव)
नासिरुद्दीन महमूद	नायब-ए-मुमालिकात (सुल्तान का संरक्षक)

इल्तुतमिश एवं बलबन का तुलनात्मक अध्ययन

इल्तुतमिश	बलबन
इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने खरीदा था	बलबन को इल्तुतमिश ने खरीदा था।
इल्तुतमिश ने चहलगानी / चालीसा दल का गठन किया।	बलबन ने चालीसा को समाप्त कर दिया।
इल्तुतमिश ने बाहरी व आंतरिक समस्याओं पर नियंत्रण व राज्य विस्तार किया।	बलबन ने आंतरिक प्रशासन पर विशेष बल दिया एवं राजत्व का सिद्धांत दिया। बलबन ने साम्राज्य विस्तार नहीं किया।
स्थापित व्यवस्था अस्थायी थी एवं प्रभाव अल्पकालीन था।	स्थायी व्यवस्था की।

कैकुबाद अथवा 'कैकोबाद' (1287-1290 ई.)

- 17-18 वर्ष की अवस्था में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया गया था।
- कैकूबाद के पूर्व बलबन ने अपनी मृत्यु के पूर्व कैखुसरों को अपना उतराधिकारी नियुक्त किया था। लेकिन दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन मुहम्मद ने बलबन की मृत्यु के बाद कूटनीति के द्वारा कैखुसरों को मुल्तान की सूबेदारी देकर कैकुबाद को दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा दिया।
- **अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता ने कैकुबाद के समय में यात्रा की थी, उसने सुल्तान के शासन काल को 'एक बड़ा समारोह' की संज्ञा दी।**
- **कालान्तर में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने उचित अवसर देखकर शम्सुद्दीन का वध कर दिया।**
- शम्सुद्दीन की हत्या के बाद जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने दिल्ली के तख्त पर स्वयं अधिकार कर लिया।
- **इस प्रकार से बाद में दिल्ली की राजगद्दी पर खिलजी वंश की स्थापना हुई।**

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96 ई.)

- कैमूर्स की हत्या कर जलालुद्दीन ने खिलजी वंश की स्थापना की
- **1290 ई. में जलालुद्दीन ने** कैकुबाद द्वारा निर्मित किलोखरी किले में **स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया।**
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने उदार धार्मिक नीति अपनाई। उसने **घोषणा करी की शासन का आधार शासितों (प्रजा) की इच्छा होनी चाहिए।** ऐसी घोषणा करने वाला यह प्रथम शासक था। अपनी उदार नीति के कारण जलालुद्दीन ने अपने शत्रुओं को भी उच्च पद दिये थे।
- जलालुद्दीन 70 वर्ष (सर्वाधिक वृद्ध सुल्तान) की उम्र में सुल्तान बना था। यही कारण है कि उसके विचार उसकी उम्र से प्रभावित थे।
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी धार्मिक सहिष्णु व्यक्ति था, लेकिन 1291-92 ई. में सुल्तान ने ईरानी संत सीदी मौला को सुल्तान की आलोचना करने पर मृत्यु दंड दिया।

जलालुद्दीन खिलजी द्वारा किये गये अभियान

- 1291 ई. में जलालुद्दीन ने रणथम्भौर अभियान किया लेकिन जीत नहीं सका।
- **1292 ई. में अब्दुल्ला के नेतृत्व में मंगोलों ने आक्रमण किया** जिसे जलालुद्दीन द्वारा पराजित किया गया।
- 1292 ई. में ही मंडौर (जोधपुर) को जीता तथा सल्तनत में मिलाया
- 1294 ई. में अली गुर्शास्प (अलाउद्दीन खिलजी) द्वारा मालवा व भिलसा (मध्यप्रदेश) को जीता। मालवा अभियान के समय अलाउद्दीन खिलजी ने उज्जैन, धारा नगरी, चंदेरी के मंदिरों को नष्ट किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई. में धोखे से जलालुद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गयी।

प्रमुख कवि

अमीर खुसरो तथा हसन देहलवी

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- अलाउद्दीन खिलजी, खिलजी वंश के दुसरे शासक थे।
- उसको अपने आपको दूसरा अलेक्जेंडर बुलवाना अच्छा लगता था, उसे सिकन्दर-आई-सनी का खिताब दिया गया था। खिलजी ने अपने राज्य में शराब की खुले आम बिक्री बंद करवा दी थी।
- **वे पहले मुस्लिम शासक थे, जिन्होंने दक्षिण भारत में अपना साम्राज्य फैलाया था,** और जीत हासिल की थी।
- **खिलजी के साम्राज्य में उनके सबसे अधिक वफादार जनरल थे मलिक काफूर** और खुश्रव खान।

मंगोल आक्रमण

- **दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी के काल में हुआ।**

- अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि उसके काल में कुल 6 मंगोल आक्रमण हुए । उसके शासन काल में मंगोल खतरा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।
- अलाउद्दीन ने मंगोलों के प्रति रक्त एवं युद्ध पर आधारित अग्रगामी नीति का अनुसरण किया। ऐसा करने वाला पहला सुल्तान था। महत्त्वपूर्ण है कि इसी समय मंगोल शासक दवा खान ने अफगानिस्तान को रौंदने के बाद रावी नदी तक अपने शासन का विस्तार किया।
- सर्वप्रथम उसी ने दिल्ली विजय की नीति अपनायी और अपने पुत्रों को भारत पर आक्रमण करने हेतु भेजा। **मंगोलों की दिल्ली विजय की नीति 1306 ई. में दवा खान की मृत्यु के बाद ही खत्म हो पायी** ।
- **सीरी को नयी राजधानी के रुप में विकसित किया। पहली बार दिल्ली के चारों ओर एक रक्षात्मक चार दीवारी बनायी गयी।**
- सीमान्त प्रदेश की रक्षा लिए एक पृथक सेना और एक सीमा रक्षक का पद लाया। इस पर पहली नियुक्ति गाजी मलिक (गियासुद्दीन तुगलक) की हुई। उसे 1305 ई. में पंजाब का सूबेदार बनाया गया। गाजी मलिक प्रतिवर्ष मंगोल क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें आतंकित करता था।

अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान

राज्य	शासक	वर्ष	खिलजी सरदार	विशेष / विवरण
गुजरात	रायकरन बघेला (कर्ण)	1298 ईस्वी	उलूग और नुसरत खां	गुजरात अभियान के मार्ग में जैसलमेर विजित किया कर्ण भाग गया ।
रणथंभौर	राणा हम्मीर देव (चौहान शासक)	1301 ईस्वी	उलूग खां और नुसरत खा	पहले राणा ने हमला विफल कर दिया और नुसरत खां मारा गया अब अलाउद्दीन स्वयं आया राजपूतों ने जौहर किया और हम्मीर युद्ध में मारा गया ।
चित्तौड़	रतन सिंह	1303 ईस्वी	अलाउद्दीन खिलजी	चित्तौड पर अधिकार कर उसका नाम 'खिज्राबाद' रखा 1311ई. में चित्तौड़ मालदेव को सौंप दिया ।
मालवा	महलकदेव	1305 ईस्वी	आइन उल मुल्क मुल्तानी	महलक देव मांडू भाग गया और मालवा खिलजी साम्राज्य में मिल गया ।
सिवाना	शीतलदेव (परमार वंशीय)	1308 ईस्वी	कमालुद्दीन कुर्ग	-
जालौर	कान्हदेव (कृष्णदेव)	1311 ईस्वी	कमालुद्दीन कुर्ग	शासक के भाई मालदेव को खुश होकर चित्तौड़ सौंपा ।

- **दक्षिण भारत**

देवगिरी	रामचंद्र देव (यादव शासक)	1296 ई.	अलाउद्दीन खिलजी	रामचंद्र देव ने एलिचपुर प्रांत की आय देने का वादा किया ।
देवगिरी	रामचंद्र देव	1307 ई.	मलिक काफूर	रामचंद्र ने कर देना बंद कर दिया था अतः आक्रमण हुआ रामचंद्र ने समर्पण किया और दिल्ली गया वहां अलाउद्दीन ने मित्रवत व्यवहार कर उसे रायरायन की उपाधि दी साथ ही नवसारी जिला भेंट किया ।
वारंगल	प्रताप रुद्र देव (काकतीय शासक)	1309 ई.	मलिक काफूर	देवगिरी ने काफ़ूर को सहायता दी और काफूर तेलंगाना की राजधानी पहुंच गया और शासक की सोने की मूर्ति और कोहिनूर हीरा तथा भारी मात्रा में लूट का माल लेकर लौटा ।
द्वारसमुद्र	वीर बल्लाल-III (होयसल वंश)	1310 ई.	मलिक काफूर	देवगिरी का सेनापति पारसदेव (परशुराम दलावे) काफूर की मदद के लिए साथ हो लिया । वीर बल्लाल स्वयं पांडय उत्तराधिकारी युद्ध में भाग लेने गया था बल्लाल ने समर्पण किया और काफूर के साथ दिल्ली गया अलाउद्दीन ने भव्य स्वागत किया ।
पांडय	वीर पांडय	1311 ई.	मलिक काफूर	काफूर पांडय राज्य के उत्तराधिकार युद्ध में सुंदर पाण्ड्य के पक्ष में गया था । साथ में बीर बल्लाल भी था वीर पांडे भागता रहा यह अभियान लूट की दृष्टि से श्रेष्ठ था ।
देवगिरी	शंकरदेव (सिंघण II)	1313 ईसवी	मलिक काफूर	सिंघण मारा गया और देवगिरी अधिकांशतः दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया गया।

आमिर-ए-अखुर	घोड़ों का निरीक्षक अधिकारी
आमिर-ए-हाजिब	शाही खलिसा अदालत का प्रभारी अधिकारी (जिसे तुर्की में बर्बेक/बारबेक भी कहा जाता है)
आमिर-ए-कोह	कृषि का प्रभारी अधिकारी
अर्ज	सैनिकों की गिनती, उनके उपकरण और घोड़ों का प्रभारी अधिकारी
अर्ज-ए-मुमालिक	सेना का प्रभारी मंत्री
बर्बेक/बारबेक	शाही दरबार का प्रभारी अधिकारी
बरिद	सूचना एकत्र करने के लिए राज्य द्वारा नियुक्त खुफिया अधिकारी
बरिद-ए-मुमालिक	राज्य खुफिया सेवा का प्रमुख
दाबिर	सचिव
दाबिर-ए-मुमालिक	मुख्य सचिव
दाग	घोड़ों पर ब्रांडिंग का निशान
दीवान	कार्यालय : केंद्रीय सचिवालय
दीवान-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-इंशा	मुख्य सचिव का कार्यालय
हुक्म-ए-मुशाहिद	भू-राजस्व का आकलन (केवल निरीक्षण के द्वारा)
इक्तादार	इक्ता का प्रभारी
जागीर	राज्य द्वारा एक सरकारी अधिकारी को दिया गया भूमि का एक टुकड़ा
जीतल	सल्तनत कालीन तांबे के सिक्के
जजिया	गैर - मुसलमानों पर लगाया जाने वाला व्यक्तिगत और वार्षिक कर
कारखाना	शाही कारखाना या उद्योग, यह दो प्रकार के होते थे - रत्बी, जानवरों की देखभाल के लिए और गैर-रत्बी, राज्य द्वारा आवश्यक वस्तुओं के निर्माण के लिए।
खालिसा	सीधे राजा द्वारा नियंत्रित भूमि
खिदमति	सेवा देय राशि
खुत्स	गांव का प्रमुख या राजस्व संग्राहक
मदद-ए-माश	धार्मिक या योग्य व्यक्तियों के लिए भूमि या पेंशन का अनुदान
मजलिस-ए-खास	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मजलिस-ए-खिलावत	राजा और उसके उच्च अधिकारियों की एक गुप्त बैठक
मलिक नायब	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि

मुहतासिब	गांव में कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नियुक्त एक अधिकारी, जो गांव का सबसे वरिष्ठ नागरिक होता था।
मुक्ता	गवर्नर, एक इक्ता या मध्यकालीन प्रांत का प्रभारी
मुस्तौफी-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का लेखाकार (एकाउंटेंट)
मुस्तौफी-ए-मामलिक	पूरे राज्य का लेखा परीक्षक
नायब-ए-अर्ज	युद्ध मंत्री या उसका सहायक
नायब-ए-मम्लाकत	पूरे राज्य का शासक या राजा की ओर से कार्य करने के लिए अधिकृत राजा का प्रतिनिधि
दीवान-ए-रियासत	व्यापार और वाणिज्य मंत्री का कार्यालय
दीवान-ए-मुस्तखराज	कर संग्रह करने के लिए कार्यालय
दोआब	गंगा और यमुना नदी के बीच की भूमि
फ़तवा	सशगनी शरीयत या धार्मिक कानून के अनुसार एक फैसला
फौजदार	सेना का सेनापति
हक्क-ए-शिर्ब	नहर सिंचाई से लाभ
हुक्म-ए-मसाहट	माप के अनुसार भूमि राजस्व का आकलन
चुंगी-ए-गल्ला	अनाज पर कर
आमिर-ए-तारब	मनोरंजन कर
गल्ला बख्शी, कानकूट	भूमि राजस्व संग्रह की व्यवस्था
नायब-ए-मुल्क	साम्राज्य का शासक
काजी-उल-कज्जात	मुख्य काजी
सराई-अदल	कपड़े और अन्य विशिष्ट वस्तुओं की बिक्री के लिए दिल्ली के बाजार को अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा दिया गया नाम
साशगनी	छः जीतल या तांबे के सिक्कों के बराबर एक छोटा चांदी का सिक्का
सहना-ए-मंडी	अनाज के बाजार का प्रभारी अधिकारी
सिपहसलार	सेनापति

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

A फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को
C. डचों एवं पुर्तगालियों को D. डचों को **उत्तर – A**

प्रश्न-8. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था?

A लॉर्ड क्लाइव B. लॉर्ड वारेन हेस्टिंग
C. लॉर्ड जॉन शोर D. लॉर्ड कार्नवालिस

उत्तर – B

प्रश्न-9. भारत का पहला भारतीय गवर्नर जनरल कौन था?

A B.R. अम्बेडकर B. सी. राजगोपालाचारी
C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद D. डॉ. एस. राधाकृष्णन

उत्तर – B

प्रश्न-10. निम्न में से किसको आधुनिक भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है ?

A लॉर्ड कार्नवालिस B. विलियम बैंटिक
C. लॉर्ड डलहौजी D. लॉर्ड कर्जन

उत्तर – C

प्रश्न-11. भारत के औपनिवेशिक काल में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत किस क्षेत्र से संबन्धित था?

A रेल B. चिकित्सा
C. शिक्षा D. सिंचाई
उत्तर - C

मुख्य परीक्षा

1. आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन के धार्मिक शिक्षाओं में आधारभूत अंतर क्या है?

2. भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?

अध्याय – 8

स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण:

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग- अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक - राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलतः एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एकिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।

- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) <u>पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन</u> :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे- स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) <u>लिटन और कर्जन की नीतियाँ</u> :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने
का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की | इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) <u>रिपन की नीतियाँ</u> :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** है। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

<u>कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ</u> :-

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैण्ड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित हैं।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती हैं। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec. 1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना

(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।

(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया।

(8) 1884 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

<u>कांग्रेस की स्थापना</u> :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।

मध्य प्रदेश का गठन -

- 15 अगस्त 1947 को देश के स्वतंत्र होते ही भारत के हृदय स्थल में एक नया राज्य आकार लेता है जिसे भूतपूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मध्य प्रदेश कहा था।
- सन 1948 तक प्रशासनिक दृष्टि से इस 4 कमिश्नरी एवं 19 जिले थे। लेकिन बाद में नए जिलों के निर्माण के बाद कुछ जिलों की संख्या 22 एवं तहसीलों की संख्या 111 हो गई थी।
- तत्कालीन भारत के 600 रियासतों में नवीन राज्यों का एकीकरण किया गया तब मध्यप्रदेश में सी.पी एंड बराबर के क्षेत्र में महाकौशल एवं छत्तीसगढ़ की रियासतों को मिलाकर नवीन राज्य मध्य प्रदेश का गठन किया गया, जिसकी राजधानी नागपुर रखी गई थी।
- 1950 में इस प्रदेश का नामकरण मध्यप्रदेश किया गया तथा राज्यों के राष्ट्रीय वर्गीकरण में मध्यप्रदेश को पार्ट - ए में शामिल किया गया।
- 1947 से पूर्व वर्तमान मध्य प्रदेश का भौगोलिक भाग रियासती एवं ब्रिटिश शासन के अधीन प्रशासित भाग था। आजादी के बाद मध्य प्रदेश तीन भागों में बांटा हुआ था -
  पार्ट - A - ब्रिटिश भारत के सभी प्रांत
  पार्ट - B देशी रियासत के सम्मेलन से बने प्रांत
  पार्ट - C - केंद्रीय सरकार द्वारा शासित प्रांत
- तत्कालीन मध्य प्रदेश एवं विंध्य प्रदेश पार्ट A प्रांत थे। मध्य भार पार्ट B का प्रांत एवं भोपाल पार्ट C का प्रांत था। जनवरी 1950 को विंध्य प्रांत की पार्ट B का दर्जा दिया गया।

मध्यप्रदेश की रियासतें -

मध्य भारत में निम्नलिखित रियासतों के सम्मेलन से बना था इसकी राजधानी ग्वालियर थी।

1. अलीराजपुर 2. बड़वानी 3. देवास (सीनियर) 4. धार 5. ग्वालियर 6. देवास(जूनियर) 7. इंदौर 8. रतलाम 9. सीतामक 10. काठीवाड़ा 11. मथबार 12. मुहम्मद गढ़ 13. थमिया स्टेटस 14. जामिनिया 15. जावरा 16. सैलोना 17. जोबट 18. कुरवाई 19. पिपलोदा 20. पथरी 21. नीमखेड़ा 22. राजगढ़

1948 में मध्य भारत की 22, भोपाल की 5, बुंदेलखंड एवं बघेलखंड की 35 एवं महाकौशल की 15 रियासतों को मिलाकर मध्यप्रदेश बनाया गया था।

मध्यप्रदेश का पुनर्गठन -

- नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा पर नवीन मध्य प्रदेश का गठन किया गया था।
- 1 नवंबर 1956 को पुनर्गठन के दौरान महाकौशल क्षेत्र के 17 जिले, भोपाल राज्य के 2 जिले, मध्य भारत के मंदसौर जिले के सुनेल क्षेत्र को छोड़कर 16 जिले, मध्य प्रदेश के 8 जिले तथा राजस्थान के कोटा जिले की सिरोंज तहसील को छोड़कर मध्यप्रदेश बना दिया गया था।
- 1 नवंबर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य का गठन करके भोपाल की राजधानी बनाया गया। दोस्त मोहम्मद को वर्तमान भारत का संस्थापक माना जाता है।
- 1 नवंबर 2000 में मध्य प्रदेश का विभाजन कर नए राज्य छत्तीसगढ़ की स्थापना की गई थी।

Note - Important Fact

मध्य प्रदेश के इतिहास की प्रमुख तिथियां -

- **648 ई.** - मध्य प्रदेश कई छोटे-बड़े राज्यों में विभक्त हो गया
- **1018-1060 ई.-** मालवा के प्रमुख शासक भोज का शासनकाल
- **1019 ई.** - ग्वालियर पर महमूद गजनी के आक्रमण
- **1197 ई.** - मोहम्मद गौरी का ग्वालियर पर आक्रमण
- **1370 ई.-** कवत्तारस्खी वंश की स्थापना (इसका शासन निमाड़ जिले से ताप्ती घाटी तक था]
- **1517 ई.** - मेवाड़ के राजा सांगा की मालवा पर विजय
- **1526 ई.** - बाबर का ग्वालियर, चंदेरी और रायसेन पर अधिकार
- **1722-23 ई.** - पेशवा बाजीराव ने मालवा को लूटा
- **1722-23 ई.** - सारंगपुर युद्ध में मराठों ने गिर बहादुर को पराजित किया
- **1737 ई.-** भोपाल की युद्ध में पेशवा बाजीराव ने हैदराबाद के निजाम को पराजित किया
- **1781 ई.** - नरहरी शाह को सागर के मराठा सूबेदार ने परास्त किया
- **1817 ई.** - लॉर्ड हेस्टिंग्स ने नागपुर व नर्मदा के उत्तर भाग का सारा क्षेत्र मराठों से छीन लिया
- **1818 ई.** - पेशवा को पराजित कर अंग्रेजों ने जबलपुर व सागर क्षेत्र रघुजी भोसले से हतिया लिए
- **1883 ई.** - रामगढ़ नरेश जुझारू सिंह के पुत्र देवनाथ सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया
- **1842 ई.** - हीरापुर के हिरेनशाह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया
- **1858 ई.** - रानी अवंतीबाई और अंग्रेजों के बीच युद्ध
- **1891 ई.** - नागपुर में कांग्रेस का सातवां अधिवेशन
- **1922 ई.** - सीहोर कोतवाली के समक्ष विदेशी फैल्टेहैट की होली जली
- **1923 ई.** - प्रदेश का प्रसिद्ध झंडा सत्याग्रह का आरंभ
- **1930 ई.** - जबलपुर में सेठ गोविंद दास एवं पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्रा के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह प्रदेश में प्रारंभ हुआ
- **1930 ई.** - जंगल सत्याग्रह का आरंभ
- **1931 ई.** - त्री सेवादल की स्थापना
- **1935 ई.** - प्रजा परिषद की स्थापना
- **1938 ई.** - भोपाल राज्य प्रजामंडल की स्थापना, खंडवा, सीहोर, रायसेन, जबलपुर आदि नगरों में नमक कानून तोड़ा गया

अध्याय – 5

मध्यप्रदेश की जनजातियां एवं बोलियां

जनजाति -

- दुर्गम क्षेत्र में निवास करने के कारण कुछ जातीय समूह सामाजिक विकास की मुख्यधारा से अलग- अलग हो गए, जिन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे - वन्य जाति, आदिवासी, पर्वत वासी इन्हें ही जनजाति कहते हैं।
- मध्यप्रदेश में लगभग 47 जनजाति निवास करती हैं, 2011 की जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश की जनसंख्या 21.4 %जनसंख्या आदिवासी है।
- अनुसूचित जनजाति की संख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है।
- मध्यप्रदेश में भारत के कुल जनजातियों का 14.69% भाग निवास करता है।
- मध्यप्रदेश की अधिकतर जनजाति प्रोटोआस्ट्रेलाइड समूह का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रोटोआस्ट्रेलाइड समूह -

- नेग्रिटोस भारत में आने वाली नस्लीय समूह से पहला था इनका(colordark) होता था ।
- प्रोटोआस्ट्रेलाइड - जाति नेग्रिटोस के ठीक बाद यहां आई थी और यह ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी है।
- देश का पहला आदिवासी शोध एवं विकास संस्थान भोपाल में है।
- देश का पहला आदिवासी संचार केंद्र झाबुआ में है।
- इंदिरा गांधी आदिवासी विश्वविद्यालय अमरकंटक में स्थापित किया गया।
- आदिवासी संग्रहालय छिंदवाड़ा के पातालकोट में स्थापित है।
- जनजातीय संग्रहालय भोपाल में स्थित है।

गोंड जनजाति :-

- गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजाति है।
- गोंड जनजाति समूह मध्य प्रदेश निवास का सबसे बड़ा समूह है और यह मध्य प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।
- गोंड द्रविडयन मूल के है।
- गोंड की उत्पत्ति कोड शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है पर्वत
- गोंड स्वयं को कोयतोर (पर्वत वासी)कहते है।
- यह मध्य प्रदेश के सभी जिलों में फैली हुई है लेकिन नर्मदा के दोनों और विंध्यांचल और सतपुड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में इसका अधिक संकेद्रण है।
- इन्हें मोटे अनाज से बना पेय पदार्थ पेज अत्यधिक प्रिय है। इन जातियों में ममेरे-फुफेरे भाई बहनों में विवाह अधिमान्य होता है और यह एक प्रथा है जिसे दूध लोटावा कहते है।

गोंडों में प्रचलित अन्य विवाह - 1. पटोनी विवाह 2. चढ़ विवाह 3. लमसेनाविवाह

गोंड जनजाति के लोग बारी नामक स्थानांतरित कृषि करते है।

वनोपज संग्रह, पशु पालन, मुर्गी पालन एवं मजदूरी इनके आजीविका के साधन है।

धार्मिक विश्वास में टोटम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बूढादेव इनके प्रमुख देवता है इसके अतिरिक्त दुल्हा देव, सूरज देव, नारायण देव भी महत्वपूर्ण देवता है।

टोटम प्रथा (totemism) - टोटम को गढ़चिन्हवाद भी कहते है। टोटम किसी समाज में उस विश्वास को कहते है जिसमें मनुष्यो का किसी जानवर वृक्ष, पौधों या अन्य आत्मा से संबंध माना जाए

- इनके मनोरंजन की प्रथा घोटूल है। इसके सदस्य अविवाहित युवक युवतियाँ होते है।
- गोंड की उपजातियां (1) अगरिया - लोहे का काम करने वाले वर्ग में आते है।
- प्रधान मंदिरों में पूजा-पाठ तथा पुजारी का काम करने वाले
- कोइला भूतिस - नाचने गाने वाले
- ओझा - पंडिताई तथा तांत्रिक क्रिया करने वाले
- सोलाहस - एक साधारण वर्ग है।
- गोंड जनजातियों के निवास स्थान को गोंडों कहां जाता है जिन्हे दो वर्ग में बांटा जा गया है-
- राजगोंड - यह लोग भूस्वामी होते है।
- धुर गोंड - यह गोंडों का साधारण वर्ग है।
- गोंडों के प्रमुख नृत्य - सैला, करमा, भडोनी बिरछा, कहरवा, सजनी, सुआ, दीवानी है।
- गोंडो के प्रमुख पर्व - बिदरी, करमा, बकपंथी भडई, हरदिली, छोरता, नवाखानी, मेघनाद

भील जनजाति -

- भील जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से भारत की दूसरी तथा मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है।
- भील शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के बील शब्द से हुई है जिसका अर्थ धनुष चूकि यह धनुर्विद्या में निपुण तथा धनुर्धारी (धनुष को धारण करके रहना) है इसलिए इन्हें भील कहा गया है।
- भील स्वयं को राजपूत एवं राजस्थान के प्राचीन निवासी मानते है।
- यह जनजाति मध्यप्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र झाबुआ, धार, खरगोन, बड़वानी आदि जिलों में निवास करती है।
- भील अपने निवास स्थल को फाल्या कहते है तथा इनके बड़े गांव को 'पाल' तथा छोटे गांव को फला कहा जाता है।
- भील संसार की सबसे अधिक रंग प्रिय जनजाति है, जबकि भील स्त्रियां विश्व की सबसे अधिक गनदना और गुदना प्रिय है।

एथलेटिक्स अकादमी	जुलाई 2016	भोपाल
क्रिकेट अकादमी	जुलाई 2016	शिवपुरी
स्विमिंग अकादमी	जुलाई, 2008	होशंगाबाद
वाटर स्पोर्ट्स अकादमी	जुलाई, 2007	भोपाल
मार्शल आर्ट अकादमी	जुलाई 2007	भोपाल
पुरुष हॉकी अकादमी	जुलाई 2007	भोपाल
महिला हॉकी अकादमी	जुलाई, 2006	ग्वालियर
बैडमिंटन अकादमी	जुलाई 2010	ग्वालियर
इक्वेस्ट्रियन (घुड़सवारी) अकादमी	जुलाई, 2007	भोपाल (बीसन खेड़ी)
मलखम्भ अकादमी	2018	उज्जैन

मध्यप्रदेश के प्रमुख मेले

मेले के नाम	स्थान
पीर बुधान मेला	साँवरा (शिवपुरी)
हीरा भूमिया मेला	गुना
रामलीला मेला	ग्वालियर
मान्धाता मेला	खण्डवा
बरमान मेला	गाडरवाड़ा (नरसिंहपुर)
शंकरजी का मेला	चौरागढ़ (पचमढ़ी)
नागाजी का मेला	पोरसा (मुरैना)
चेती मेला	ब्यावरा
शहीद मेला	सनावद (गुना)
संत बुखारदास व गुलाबदास बाबा का मेला	खण्डवा
शिव मेला	भोजपुर (रायसेन)
सलकनपुर मेला	सलकनपुर (होशंगाबाद)
जलविहार मेला	छतरपुर
चाँदी देवी मेला	घोघरा (सीधी)
महामृत्युंजय का मेला	रीवा
सिंहस्थ मेला (कुम्भ)	उज्जैन
जोगेश्वरी देवी	चंदेरी (अशोकनगर)
सिंगाजी का मेला	पिपल्या खुर्द (प. निमाड़)
कालूजी महाराज मेला	पिपल्या खुर्द (प. निमाड़)
कानाबाबा मेला	सोडलपुर (हरदा)
तेजाजी का मेला	सनावद (गुना)
धामोनी उर्स	धामोनी (सागर)

मध्यप्रदेश की प्रमुख साहित्य एवं ललित कला अकादमियाँ

अकादमी का नाम	स्थापना वर्ष	मुख्यालय
कालिदास अकादमी	1977	उज्जैन
उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी	1979	भोपाल
मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद्	1980	भोपाल

भारत-भवन	1982	भोपाल
मध्यप्रदेश सिंधी अकादमी	1983	भोपाल
अल्लामा इकबाल अदबी अकादमी	1984	भोपाल
मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी	1985	भोपाल
मध्यप्रदेश तुलसी अकादमी	1987	भोपाल
मध्यप्रदेश कला परिषद्	1952	भोपाल
मध्यप्रदेश साहित्य परिषद्	1954	भोपाल
पुरातत्व एवं अभिलेखागार संग्रहालय	1956	भोपाल
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	1969	भोपाल
मध्यप्रदेश हिन्दी उर्दू अकादमी	1976	भोपाल
मध्यप्रदेश . पंजाबी अकादमी	2013	भोपाल
मध्यप्रदेश . भोजपुरी अकादमी	2013	भोपाल

प्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य

नृत्य	क्षेत्र / अंचल	अवसर
बधाई	बुंदेलखण्ड	जन्म, मुण्डन, सगाई, विवाह आदि
राई	बुंदेलखण्ड	जन्म, मुण्डन, सगाई, विवाह आदि
रास नृत्य	बुंदेलखण्ड	स्त्रीपरक, जन्माष्टमी पर ऋतु संबंधी अवसर पर
सैरा	बुंदेलखण्ड	सावन-भादो
कानड़ा	बुंदेलखण्ड	विवाह के अवसर पर
कलश नृत्य	बुंदेलखण्ड	संस्कारपरक, नट जाति में प्रचलित
रावला नृत्य	बुंदेलखण्ड	जातीय नृत्य, कई जातियों में प्रचलित
राछ बधाया नृत्य	बुंदेलखण्ड	विवाह में कन्या पक्ष का नृत्य, स्त्रीपरक
कातिकिया नृत्य	बुंदेलखण्ड	त्यौहारपरक, कार्तिक स्नान नृत्य, लीला संबंधी नृत्य, स्त्रीपरक
देई-देवता पूजन	बुंदेलखण्ड	वर-वधू का देवी पूजन, स्त्रीपरक, गीतपरक
बाबा नृत्य	बुंदेलखण्ड	स्त्रीपरक, विवाह अवसर
सुआ नृत्य	बघेलखण्ड	खरीफ की फसल पकने पर
राई	बघेलखण्ड	बघेली राई, पुरुष नर्तक, विवाह आदि में
दादर	बघेलखण्ड	जातिगत नृत्य,, स्त्री-पुरुष संयुक्त नृत्य
कलसा	बघेलखण्ड	विवाह में, पुरुष परक
दाँगरा	बघेलखण्ड	स्त्रीपरक, वर्षा बुलाने का नृत्य, ऋतु, संबंधी, कुँवारी कन्याओं का नृत्य
मटकी	मालवा	विवाह, मांगलिक अवसर, स्त्रीपरक
गरबी	मालवा	पुरुषपरक, माच का नृत्य
गरबा	मालवा	नवरात्रि, महिलापरक, आनुष्ठानिक
कहरवा	मालवा	सगाई, विवाह, मांगलिक अवसरों पर, स्त्रीपरक
झाला, फूलपाती	मालवा	गणगौर, कजली तीज, महिलापरक, गीत आधारित

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 1 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 2 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
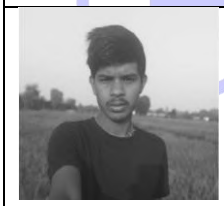	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 6 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE